इस्लामिक
नॉलेज
मुरत्तिब
मुहम्मद तौहीद अहमद खाँ रज़वी
तहसीनी फ़ाउन्डेशन
मस्जिद सुल्तान जहाँ, चक महमूद, तहसीनी नगर,
पुराना शहर, बरेली शरीफ़

इस्लामिक नॉलेज

मुरत्तिब

मुहम्मद तौहीद अहमद ख़ाँ रज़वी

नाशिर

तहसीनी फाउन्डेशन

मस्जिद सुल्तान जहाँ, चक महमूद, तहसीनी नगर,
पुराना शहर, बरेली शरीफ़
Website : www.yaraza.co.cc

नाम किताब : इस्लामिक नॉलेज
मुरत्तिब : मुहम्मद तौहीद अहमद खाँ रज़वी
तसहीह़ : ह़ज़रत मौलाना मुहम्मद इरफ़ान रज़ा साहब
नाशिर : तहसीनी फाउन्डेशन, मस्जिद सुल्तान जहाँ,
चक महमूद तहसीनी,नगर,पुराना शहर,
बरेली शरीफ़
मोबाइल नं0. 09897460733,09358828168
09219709623,
website :
www.yaraza.co.cc
कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर्स, बरेली मो.09897460733
सन इशाअ़न : 2010
तादाद : 1100
क़ीमत : 40 रू

फ़ेहरिस्त

नमाज़ की पाबन्दी करो

ह़दीसः ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जिसने नमाज़ की पाबन्दी की तो नमाज़ उसके लिये क़ियामत के दिन नूर,हुज्जत और नजात का सबब बनेगी।

पेशे लफ़्ज़

इल्मे दीन सीखना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है लेकिन अफ़सोस आज के इस दौर में लोगों की इस इल्म की तरफ़ से दूरी बढ़ती जा रही है इसी कमी को महसूस करते हुये ''तहसीनी फ़ाउन्डेशन'' बरेली शरीफ़ ने इस्लामिक नॉलेज टैस्ट का प्रोग्राम शुरू किया और इस प्रोग्राम को मुख्तलिफ़ मौक़ों पर करात रहने का पुख्ता इरादा कर लिया है। फ़ाउन्डेश्न के लोगों ने मुझ से एक ऐसी किताब तरतीब देने की ख्वाहिश ज़ाहिर की जो दीन की ज़रूरी बातों के साथ सीरते मुस्तफा सल्लाहु अलैहि वसल्लम और तारीखे इस्लाम के अहम गोशों पर मुशतमल हो। मुझे अपनी कम इल्मी का का पूरा एहसास है मगर फ़ाउन्डेशन के अराकीन के इसरार पर मै ने यह काम शुरू कर दिया। अल्हमदु लिल्लाह अल्लाह तआ़ला के एहसान और सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमत और बुज़ुरगों बिल्खुसूस मेरे पीरो मुर्शिद हुज़ूर सदरूल उलमा रदि अल्लाहु अन्हु के फ़ज़्लो करम से यह काम पूरा हुआ। मैं ने उलमाए अहले सुन्नत की मोतबर किताबों से दीन की ज़रूरी बातें अक़्ज़ करके सवाल व जवाब की शक्ल मे इस किताब में जमा कर दी है साथ ही सीरते मुस्तफ़ा और तारीखे इस्लाम के अहम गोशों को मुखतसर तौर पर तहरीर कर दिया है। इस किताब को मंज़रे आ़म पर लाने में जिन अहबाब का तआ़वुन रहा ख़ास कर मौलाना इरफ़ान रज़ा साहब जिन्होंने अपना ंकीमती वक़्त निकाल कर इस की तसहीह फ़रमाई मै उनका शुक्र गुज़ार हूँ और मुहम्मद नफ़ीस रज़ा खाँ साहब, मुहम्मद हसीन खाँ तहसीनी साहब, मुहम्मद ताहिर साहब, मुहम्मद इशरत हुसैन साहब और अब्दुल क़दीर साहब भी शुक्रिये के मुस्तहिक़ हैं कि इन हज़रात ने इस में अपना खुसूसी तआ़वुन फ़रमाया। आखिर में पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि कहीं इस में ग़लती नज़र आये तो मेरी कम इल्मी पर महमूल करते हुये इत्तिला करें। अल्लह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ है कि इसके ज़रिये अ़वामे अहले सुन्नत को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ाइदा हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और मेरे लिये इसे मग़फ़िरत और नजात का ज़रिया बनाये। आमीन।

मुहम्मद तौहीद अहमद खाँ रज़वी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिररहीम

अल्लाह तआ़ला के बारे में अक़ीदे

सवाल : अल्लह तआ़ला के बारे मे कैसा अ़क़ीदा रखना चाहिए ?
जवाब : अल्लाह तआ़ला एक है कोई उसका शरीक नही। आसमान, ज़मीन और सारी मखलूक़ात का पैदा करने वाला वही है। वही इबादत के लायक़ है दूसरा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा,उसे कभी मौत नही आयेगी। सबकी ज़िन्दगी उसी के दस्त-ए-क़ुदरत में है वह जिसे जब चाहे ज़िन्दगी दे और जब चाहे मौत दे। अमीरी ग़रीबी और इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत सब उसी के इख्तियार में है,जिसे चाहता है इ़ज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है ज़िल्लत देता है। उसका हर काम हिकमत है बन्दों की समझ में आये या न आये। वह हर कमाल व खूबी वाला है। झूट,दग़ा,खयानत,ज़ुल्म और जहल वगैरह से पाक है। उसके लिये किसी ऐब का मानना कुफ्र है। वह न किसी का बाप है और न किसी का बेटा और न ही उसके लिये कोई बीवी है।
सवाल : जो शख्स सारे आ़लम में से किसी चीज़ को खुद से मौजूद माने या उसके हादिस होने में शक करे ऐसा शख्स कैसा है ?
जवाब : ऐसा शख्स काफिर है।
सवाल : जो शख्स यह कहे कि अल्लाह तआ़ला झूट बोल सकता है ऐसा शख्स कैसा है ?
जवाब : ऐसा शख्स गुमराह और बे दीन है।
सवाल : जो शख्स अल्लाह तआ़ला के लिये बाप,बेटा या बीवी बताये ऐसा शख्स कैसा है ?
जवाब : ऐसा शख्स काफिर है।

नबियों के बारे में अ़क़ीदे

सवाल : नबी और रसूल किसे कहते हैं ?
जवाब : नबी उस आदमी को कहते है जिसके पास अल्लाह तआ़ला ने मख़लूक़ की हिदायत के लिये वही भेजी हो और रसूल उस इन्सान को कहते हैं जो खुदा

के यहाँ से बन्दों की हिदायत के लिये उन के पास खुदा का पैग़ाम लाये और अपने साथ कोई आसमानी किताब भी लेकर आये।

सवाल : नबियों के बारे में कैसा अ़क़ीदा रखना चाहिये ?

जवाब : अम्बिया सब मर्द थे न कोई औरत नबी हुई और न कोई जिन्न। नबियों का भेजना अल्लाह तआ़ला पर वाजिब नही उसने अपने करम से लोगों की हिदायत के लिये नबी भेजे। नबी होने के लिये उस पर वही होना ज़रूरी है यह वही चाहे फरिश्ते के ज़रिये हो या बग़ैर किसी वास्ते और ज़रिये के हो। नबुव्वत ऐसी चीज़ नहीं कि आदमी इबादत या मेहनत के ज़रिये हासिल कर सके बल्कि यह महज़ अल्लाह तआ़ला की देन है जिसे चाहता है अपने करम से देता है। नबी का मासूम होना ज़रूरी है, इसी तरह मासूम होने की खुसूसियत फरिश्तों के लिये भी है, नबियों और फरिश्तों के सिवा कोई मासूम नहीं, कुछ लोग इमामों को नबियों की तरह मासूम समझते हैं यह गुमराही और बद दीनी है, नबियों के मासूम होने का मतलब यह है कि उनकी हिफ़ाज़त के लिये अल्लाह तआ़ला का वादा है इसलिये शरियत का फैसला है कि उन से गुनाह का होना मुहाल और नामुमकिन है। अल्लाह तआ़ला इमामों और बड़े वलियों को भी गुनाहों से बचाता है मगर शरीयत की रौशनी में उन से गुनाह का हो जाना मुहाल नहीं। कोई उम्मती इल्म, इबादत, और नेकियों में नबी से नहीं बढ़ सकता बल्कि बराबर भी नहीं हो सकता। अल्लाह तआ़ला ने नबियों पर बन्दों के लिये जितने अह़काम नाज़िल किये वह सब उन्होंने पहुँचा दिये। नबी अपनी क़बरों में उसी तरह ज़िन्दा हैं जैसे दुनिया में थे, अल्लाह तआ़ला का वादा पूरा होने के लिये एक आन को उन्हें मौत आई और फिर ज़िन्दा हो गये। अल्लाह तआ़ला ने अपने नबियों को ग़ैब की बातें बताई हैं, ज़मीन और आसमान का हर हर ज़र्रा हर नबी की नज़र के सामने है यह ग़ैब का इल्म अल्लाह तआ़ला के अ़ता फरमाने से है। अम्बिया अलैहिमुस्सलाम शिर्क, कुफ्र और हर ऐसी चीज़ से पाक और मासूम हैं जिस से मख़लूक़ को नफरत हो जैसे झूट, खयानत और जहालत वग़ैरह बुरी सिफतें।

सवाल : जो शख्स यह कहे कि हुज़ूर का इल्म जानवरों, पागलों और बच्चों की तरह

है ऐसा शख्स कैसा है ?

जवाब : ऐसा शख्स काफिर है।

सवाल : नबियों में सबसे अफ़ज़ल नबी कौन हैं ?

जवाब : नबियों में सबसे अफज़ल नबी हमारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम हैं , हमारे सरकार के बाद सबसे बड़ा मरतबा ह़ज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का है फिर ह़ज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का फिर ह़ज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और ह़ज़रत नूह़ अलैहिस्सलाम का मरतबा है।

हमारे नबी की खूबियाँ

सवाल : हमारे नबी की कुछ खूबियाँ बयान कीजिये ?

जवाब : हमारे नबी ह़ज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा दूसरे नबियों को एक ख़ास़ क़ौम के लिये भेजा गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम मख़लूक़, इन्सानों,जिनों,फ़िरिशतों, हैवानात,जमादात सब के लिये भेजे गये। जिस तरह इन्सान के ज़िम्मे हुज़ूर की इत़ाअ़त फ़र्ज़ और ज़रूरी है उसी तरह हर मख़लूक़ पर हुज़ूर की फ़रमाबरदारी फ़र्ज़ और ज़रूरी है। हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुन नबिय्यीन हैं, अल्लाह तआ़ला ने नबुव्वत का सिलसिला हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़त्म कर दिया, हुज़ूर के ज़माने में या उन के बाद कोई नबी नहीं हो सकता। अल्लाह तआ़ला की तमाम मख़लूक़ात से हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम अफ़ज़ल हैं, कि औरों को जो कमालात दिये गये हुज़ूर में वह सब इकठठा कर दिये गये और उनके अलावा हुज़ूर को वह कमालात मिले जिन में किसी का ह़िस्सा नहीं बल्कि औरों को जो कुछ मिला हुज़ूर के तुफैल में बल्कि हुज़ूर के मुबारक हाथों से मिला। हुज़ूर जैसा किसी का होना मुह़ाल है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला ने ''महबूबियते कुबरा'' का मरतबा दिया है यहाँ तक कि तमाम मख़लूक़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा चाहती है और अल्लाह तआ़ला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ा चाहता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह का जमाल अपने सर की आँखों से देखा और अल्लाह का कलाम बिना किसी ज़रिये के सुना और ज़मीन व आसमान के हर ज़र्रे को तफ़स़ील से देख़ा। क़ियामत के दिन शफ़ाअ़ते कुबरा का मरतबा हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के साथ ख़ास़ है। हुज़ूर की फरमाबरदारी अल्लाह तआ़ला की फरमाबरदारी है। हुज़ूर सय्यदुल अम्बिया हैं यानि अम्बियाए किराम के सरदार हैं और तमाम अम्बिया हुज़ूर के उम्मती हैं।

मलाइका(फ़िरिशतों) का बयान

सवाल : फ़िरिशते क्या चीज़ हैं ?

जवाब : फिरिशते नूरी जिस्म वाले हैं, अल्लाह तआ़ला ने उन को यह ता़क़त दी है कि जो शक्ल चाहें बन जायें, फ़िरिशते कभी इन्सान की शक्ल बना लेते हैं कभी कोई दूसरी शक्ल। फ़िरिशतें वही करते हैं जो अल्लाह तआ़ला का हुक्म होता है, फ़िरिशते अल्लाह तआ़ला के हुक्म के ख़िलाफ़ कुछ नही करते न जान बूझ कर, न भूले से और न ग़लती से क्योंकि वह अल्लाह के मासूम बन्दें हैं और हर तरह के सग़ीरा(छोटे) और कबीरा(बड़े) गुनाहों से पाक हैं। फ़िरिशतों के ज़िम्मे अलग अलग काम हैं, कुछ फिरिश्ते बन्दों का अच्छा बुरा अ़मल लिख़ने पर मुक़र्रर हैं जिनको किरामन कातिबीन कहा जाता है, कुछ फिरिशते क़ब्र में मुर्दों से सवाल करने पर मुक़र्रर हैं जिनको मुनकर नकीर कहा जाता है और कुछ फिरिशते हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में मुसलमानों के दुरूदो सलाम पहूँचाने पर मुक़र्रर हैं।

सवाल : फिरिशते कितने हैं ?

जवाब : फिरिशते बेशुमार(अनगिनत) हैं उनकी गिनती अल्लाह तआ़ला ही जानता है और अल्लाह तआ़ला के बताये से उसके प्यारे महबूब जानते हैं। वैसे चार फिरिशतें बहुत मशहूर हैं।

सवाल : चार मशहूर फिरिशतों के नाम क्या हैं ?

जवाब : (1) ह़ज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम (2) ह़ज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम (3) ह़ज़रत इसराफील अलैहिस्सलाम (4) ह़ज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम।

सवाल : जो शख्स यह कहे कि फिरिशता कोई चीज़ नहीं या यह कहे कि फिरिशता नेकी की कुव्वत का नाम है ऐसा शख्स कैसा है ?

जवाब : ऐसा शख्स काफ़िर है।

जिन्न का बयान

सवाल : जिन्न क्या चीज़ हैं ?

जवाब : अल्लाह तआ़ला ने जिनों को आग से पैदा किया। इनमें बाज़ को यह त़ाक़त दी है कि जो शक्ल चाहें बन जायें। इनकी उम्रें बहुत ज़्यादा होती हैं। इनके शरीरों को शैत़ान कहते हैं। यह सब इन्सान की तरह अ़क्ल वाले, रूह वाले और जिस्म वाले हैं। इनकी औलादें भी होती हैं, खाते पीते हैं, जीते मरतें हैं। इनमें मुसलमान भी हैं और काफ़िर भी मगर कुफ़्फ़ार इनसानों की बनिसबत(मुक़ाबले) ज़्यादा हैं और इनमे नेक मुसलमान भी हैं और फ़ासिक़ भी हैं और बदमज़हब भी। इनमे फ़ासिक़ों की तादाद इन्सानों से ज़्यादा है।

सवाल : जो शख्स यह कहे कि जिन बदी की कुव्वत का नाम है ऐसा शख्स कैसा है ?

जवाब : ऐसा शख्स काफ़िर है।

आसमानी किताबों का बयान

सवाल : आसमानी किताबें कितनी हैं ?

जवाब : आसमानी किताबें छोटी बड़ी बहुत सी नाज़िल हुईं, बड़ी किताब को किताब और छोटी किताब को सहीफ़ा कहतें हैं इनमें चार किताबें बहुत मशहूर हैं।

सवाल : चार मशहूर किताबों के नाम क्या हैं और वह किन नबियों पर नाज़िल हुईं ?

जवाब : (1) तौरात जो ह़ज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई (2) ज़बूर जो ह़ज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई (3) इन्जील जो ह़ज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई (4) कुरान मजीद यह सबसे अफ़ज़ल किताब है और यह किताब सबसे अफ़ज़ल रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई।

सवाल : पूरा कुरान मजीद एक बार में नाज़िल हुआ या थोड़ा थोड़ा ?

जवाब : पूरा कुरान मजीद एक बार में नाज़िल नहीं हुआ बल्कि ज़रूरत के मुताबिक़ तेईस(23) साल तक थोड़ा थोड़ा नाज़िल होता रहा।

सवाल : पहले की उम्मतों के शरीरों ने अपनी किताब में कुछ बदल डाला क्या इसी तरह कुरान मजीद में भी कुछ बदला जा सकता है ?
जवाब : कुरान मजीद में कुछ भी नही बदला जा सकता क्योंकि इसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा अल्लाह तआला ने ख़ुद ले रखा है।
सवाल : अगर कोई शख़्स किसी आयत का इन्कार कर दे या यह कहे कि कुरान जैसा नाज़िल हुआ था वैसा नहीं रहा बल्कि कुछ घटा बढ़ा दिया गया है ऐसा शख़्स कैसा है ?
जवाब : ऐसा शख़्स काफ़िर है।

क़ियामत का बयान

सवाल : क़ियामत किसे कहते हैं ?
जवाब : क़ियामत उस दिन को कहते हैं जिस दिन हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम सूर फूंकेंगें। सूर सींग के शक्ल की एक चीज़ है जिसकी आवाज़ सुनकर सब आदमी और तमाम जानवर मर जायेगें, ज़मीन, आसमान, चाँद, सूरज और पहाड़ वग़ैरह दुनिया की हर चीज़ टूट फूट कर फ़ना हो जायेगी यहाँ तक कि सूर भी खत्म हो जायेगा और हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम भी फ़ना हो जायेगें।
सवाल : क़ियामत की कुछ निशानियाँ बयान कीजिये ?
जवाब : तीन ख़स्फ होंगें मत्लब ये है कि आदमी ज़मीन में धंस जायेगें एक खस्फ पूरब में, दूसरा पश्चिम में और तीसरा अ़रब के जज़ीरे में। दीन का इल्म उठ जायेगा मतलब ये है कि आलिम लोग उठा लिये जायेगें ऐसा नहीं कि आलिम लोग बाक़ी रहें और उनके दिलों से इल्म मिट जाये और खत्म हो जाये। ज़िना की ज़्यादती होगी। मर्द कम होगें और औरतें इतनी ज़्यादा होंगीं कि एक मर्द की मातहती में पचास पचास औरतें होंगीं। बड़े दज्जाल के अलावा तीस और दज्जाल होगें यह सब नबुव्वत का दावा करेगें जब्कि नबुव्वत खत्म हो चुकी है। माल बहुत ज़्यादा हो जायेगा यहाँ तक कि फुरात की नदी में से सोने के पहाड़ निकलेंगें। अ़रब जैसे मुल्क में खेती बाग़ और नहरें होंगीं। दीन पर क़ाइम रहना इतना मुश्किल होगा जैसा कि मुठठी में अंगारा लेना मुश्किल है। वक़्त में बरकत न होगी यहाँ तक कि एक साल महीने

की तरह, महीना हफ़्ते की तरह, हफ़्ता दिन की तरह और दिन ऐसा हो जायेगा जैसे किसी चीज़ को आग लगी और जल्दी ही बुझ गई मत्लब यह है कि वक़्त बहुत जल्दी गुज़रेगा। लोगों पर ज़कात देना भारी होगा लोग ज़कात को तावान(जुर्माना) समझेंगें। कुछ लोग इल्मे दीन पढ़ेंगें लेकिन दीन के लिये नहीं बल्कि दुनिया के लिये। मर्द अपनी औरत का फरमाबरदार होगा। औलादें अपने माँ बाप की नाफरमानी करेंगीं। लड़के अपने दोस्तों से मेल जोल रखेंगें और माँ बाप से जुदा(अलग) हो जायेगें। लोग मस्जिदों में दुनिया की बेकार बातें करेंगें और चिल्लायेंगें। गाने बजाने की ज़्यादती होगी। लोग अगले लागों पर लानत करेगें और उन्हें बुरा कहेगें। ज़लील और गंवार लोग जिन्हें तन को कपड़ा और पाँव की जूतियाँ नसीब न थीं बड़े बड़े महलों में गुरूर के साथ रहेगें, वग़ैरह।

सवाल : जो शख़्स क़ियामत का इनकार करे ऐसा शख्स कैसा है ?

जवाव : ऐसा शख्स काफ़िर है।

जन्नत व दोज़ख़ का बयान

सवाल : जन्नत क्या चीज़ है ?

जवाब : जन्नत एक मकान है जिसे अल्लाह तआला ने ईमान वालों के लिये बनाया है, उसमें ऐसी ऐसी नेमतें रखी गई हैं जिन को न आँखों ने देखा, न कानों ने सुना और न कोई उन नेमतों का गुमान कर सकता है। जन्नत में सौ दर्जें हैं एक दर्जे से दूसरे दर्जे में इतनी दूरी है कि जैसे ज़मीन से आसमान तक।

सवाल : दोज़ख़ क्या चीज़ है ?

जवाब : दोज़ख़ एक ऐसा मकान है जो अल्लाह तआला की शाने जब्बारी और जलाल की मज़हर(ज़ाहिर होने की जगह) है। जिस तरह अल्लाह तआला की रहमत और नेमत की कोई ह़द नहीं कि इन्सान शुमार नहीं कर सकता और जो कुछ इन्सान सोचता है वह ज़र्रा बराबर भी नहीं उसी तरह उसके ग़ज़ब और जलाल की कोई ह़द नहीं, इन्सान जिस कद्र भी दोज़ख़ की आफ़तों, मुसीबतों और तकलीफ़ों को सोच सकता है वह अल्लाह के अ़ज़ाब का एक बहुत छोटा सा ह़िस्सा होगा।

दोज़ख की आग हज़ार बरस तक धौंकाई गई यहाँ तक कि बिल्कुल लाल हो गई, फिर हज़ार बरस तक जलाई गई यहाँ तक कि सफ़ेद हो गई उस के बाद फिर हज़ार बरस और जलाई गई यहाँ तक कि बिल्कुल काली हो गई और अब वह काली है और उस में रौशनी का नामो निशान नहीं।

ईमान और कुफ़्र का बयान

सवाल : ईमान किसे कहते हैं ?

जवाब : ईमान उसे कहते हैं कि सच्चे दिल से उन तमाम बातों की तस्दीक़ करे जो दीन की ज़रूरियात में से हैं।

सवाल : कुफ़्र किसे कहते हैं ?

जवाब : दीन की ज़रूरियात में से किसी एक भी चीज़ के इन्कार को कुफ़्र कहते हैं अगर्चे बाक़ी तमाम ज़रूरियाते दीन को हक़ और सच मानता हो, मतलब यह है कि अगर कोई सारी ज़रूरी दीनी बातों को मानता हो मगर किसी एक का इनकार करे तो काफ़िर है।

सवाल : ज़रूरियाते दीन क्या क्या हैं ?

जवाब : ज़रूरियाते दीन बहुत हैं उनमें से कुछ यह हैं कि खुदाए तआला को एक और वाजिबुल वुजूद मानना, उसकी ज़ात व सिफ़ात में किसी को शरीक न समझना, जुल्म और झूट वग़ैरह तमाम ऐबों से उसको पाक मानना, उसके मलाइका और उसकी तमाम किताबों को मानना, कुरान मजीद की हर आयत को हक़ समझना, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और तमाम अम्बियाए किराम की नबुव्वत तसलीम करना, इन सबको अज़मत वाला जानना, उन्हें ज़लील और छोटा न समझना, उनकी हर बात जो क़तई और यक़ीनी तौर पर साबित हो उसे हक़ मानना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खातमुन नबीय्यीन मानना,उनके बाद किसी नबी के पैदा होने को जाइज़ न समझना, क़ियामत, हिसाब व किताब, जन्नत व दोज़ख़ को हक़ मानना, नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज की फर्ज़ियत को तसलीम करना, ज़िना, चोरी और शराब नोशी वगैरह हरामे क़तई की हुरमत का एतिक़ाद करना और काफ़िर को काफ़िर जानना वगैरह।

सवाल : शिर्क किसे कहते हैं ?

जवाब : शिर्क उसे कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला के अलावा किसी दूसरे को वाजिबुल वुजूद या इबादत के लायक़ माना जाये यानि ख़ुदाए तआ़ला के अल्लाह और माबूद होने में किसी दूसरे को शरीक किया जाये और यह कुफ़्र की सबसे बुरी क़िस्म है।

बिदअ़त का बयान

सवाल : बिदअ़त किसे कहते हैं ?

जवाब : जो बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित न हो उसे बिदअ़त कहते हैं।

सवाल : बिदअ़त की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब : बिदअ़त की दो क़िस्में हैं (1) बिदअ़ते ह़सना (अच्छी बिदअ़त) (2) बिदअ़ते सय्येआ (बुरी बिदअ़त)।

सवाल : अच्छी बिदअ़त किसे कहते हैं ?

जवाब : अच्छी दिअ़त उसे कहते हैं जिस से किसी सुन्नत की मुख़ालफ़त न हो जैसे पक्की मस्जिदें वनवाना।

सवाल : बुरी बिदअ़त किसे कहते हैं ?

जवाब : बुरी बिदअ़त उसे कहते हैं जिस से किसी सुन्नत की मुख़ालफ़त हो जैसे जुमा व ईदैन का खुतबा अ़रबी ज़बान के अलावा किसी और ज़बान में पढ़ना।

तक़लीद का बयान

सवाल : तक़लीद किसे कहते हैं ?

जवाब : दीन के चार इमामों में से किसी एक की पैरवी करने को तक़लीद कहते हैं।

सवाल : दीन के चार इमाम कौन हैं ?

जवाब : (1) ह़ज़रत इमाम आ़ज़म अबू ह़नीफ़ा (2) ह़ज़रत इमाम मालिक (3) ह़ज़रत इमाम शाफ़ेई (4) ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन ह़म्बल।

सवाल : हम सब किसकी तक़लीद करते हैं ?

जवाब : हम सब ह़ज़रत इमाम आ़ज़म अबू ह़नीफ़ा रदि अल्लाहु अन्हु की तक़लीद

करते हैं।
सवाल : क्या इन चार इमामों के अलावा किसी और की तक़लीद की जा सकती है?
जवाब : इन चार इमामों के अलावा किसी और की तक़लीद जाइज़ नही।

इस्तिलाहात-ए-शरइया का बयान

सवाल : फर्ज़ किसे कहते हैं ?
जवाब : फर्ज़ वह फ़ेल(काम) है कि जिसको जान बूझ कर छोड़ना सख्त गुनाह है और जिस इबादत के अन्दर वह हो बग़ैर उसके वह इबादत दुरूस्त(सहीह़) न हो।
सवाल : वाजिब किसे कहते हैं ?
जवाब : बाजिब वह फ़ेल है कि जिसको जान बूझ कर छोड़ना गुनाह और नमाज़ में जान बूझकर छोड़ने से नमाज़ का दोबारा पढ़ना ज़रूरी है और अगर भूल कर छूट जाये तो सजदए सहव करना ज़रूरी है।
सवाल : सुन्नते मुअक्कदा किसे कहते हैं ?
जवाब : सुन्नते मुअक्कदा वह फ़ेल है कि जिसको छोड़ना बुरा और करना सवाब है औ कभी कभी छोड़ने पर सज़ा और छोड़ने की आदत कर लेने पर अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ है।
सवाल : सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा किसे कहते हैं ?
जवाब : सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा वह फ़ेल है कि जिस का करना सवाब और न करने पर कुछ सज़ा नही अगर्चे आ़दत के तौर पर हो मगर शरअ़न ना पसन्द है।
सवाल : मुस्तह़ब किसे कहते हैं ?
जवाब : मुस्तह़ब वह फ़ेल है कि जिसका करना सवाब और न करने पर कुछ गुनाह नहीं।
सवाल : मुबाह किसे कहते हैं ?
जवाब : मुबाह वह फ़ेल है कि जिसका करना और न करना दोनों बराबर हों।
सवाल : ह़राम किसे कहते हैं ?
जवाब : ह़राम वह फ़ेल है कि जिसको एक बार भी जान बूझ कर करना सख़्त गुनाह है और उससे बचना फर्ज़ और सवाब है।
सवाल : मकरूहे तह़रीमी किसे कहते हैं ?

जवाब : मकरूहे तहरीमी वह फ़ेल है कि जिसके करने से इबादत नाक़िस़(अधूरी) हो जाती है और करने वाला गुनहगार हाता है अगर्चे इसका गुनाह ह़राम से कम है और चन्द बार इसका करना गुनाहे कबीरा (बड़ा गुनाह) है।
सवाल : मकरूहे तनज़ीही किसे कहते हैं ?
जवाब : मकरूहे तनज़ीही वह फ़ेल है कि जिसका करना शरिअ़त को पसन्द न हो और उससे बचना बेहतर और सवाब हो।
सवाल : ख़िलाफ़े औला किसे कहते हैं ?
जवाब : ख़िलाफ़े औला वह फ़ेल है कि जिसका न करना बेहतर और करने मे कोई हरज नही है।

वुज़ू का बयान

सवाल : वुज़ू की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?
जवाब : **ह़दीसः** ह़ज़रत अबु हुरैरह रदिअल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन मेरी उम्मत इस ह़ालत में बुलाई जायेगी कि मूँह, हाथ और पैर वुज़ू की वजह से चमकते होंगें। (बुख़ारी)
ह़दीसः ह़ज़रत मौला अ़ली रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो सख्त सर्दी में कामिल वुज़ु करे उसके लिये दूना सवाब है। (तबरानी)
सवाल : वुज़ू में कितने फ़र्ज़ हैं और कौन कौन से ?
जवाब : वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं
(1) **मूँह धोनाः** लम्बाई में शुरू पेशानी से यानि बाल उगने की जगह से ठोड़ी के नीचे तक और चौड़ाई में एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक।
(2) **कोहनियों** समेत दोनों हाथों का धोना।
(3) **चौथाई सर** का मसह करना।
(4) **दोनों पाँव** टखनों समेत धोना।
सवाल : वुज़ु करने का त़रीक़ा क्या है ?
जवाब : वुज़ू करने का तरीका यह है कि पहले बिस्मिल्लाह पढ़े फिर मिस्वाक करे

अगर मिसवाक न हो तो उंगली से दाँत मल ले, फिर दोनों हाथों को गटटों तक तीन बार धोये पहले दाहिने हाथ पर पानी डाले फिर बायें हाथ पर, दोनों को एक साथ न धोये, फिर दाहिने हाथ से तीन बार कुल्ली करे फिर बायें हाथ की छोटी उंगली से नाक साफ़ करे और दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाये, फिर पूरा चेहरा धोये यानि पेशानी पर बाल उगने की जगह से ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर हिस्से पर तीन बार पानी बहाये, इसके बाद दोनो हाथ कोहनियों समेत तीन बार धोये, उंगलियों की तरफ़ से कोहनियों के ऊपर तक पानी डाले कोहनियों की तरफ़ से न डाले, फिर एक बार दोनों हाथ से पूरे सर का मसह करे फिर कानों का और गर्दन का एक एक बार मसह करे, फिर दोनों पाँव टखनों समेत तीन बार धोये।

सवाल : धोने का मतलब क्या है ?

जवाब : धोने का मतलब यह है कि जिस चीज़ को धोयें उसके हर हिस्से पर पानी बह जाये।

सवाल : अगर कुछ हिस्सा भीग गया मगर उस पर पानी बहा नही तो वुजू होगा या नही ?

जवाब : इस तरह वुज़ू हरगिज़ नही होगा भीगने के साथ हर हिस्से पर पानी बह जाना ज़रूरी है।

सवाल : वुज़ू में कितनी सुन्नतें हैं ?

जवाब : वुज़ू में यह चीज़ें सुन्नत हैं. नियत करना, बिस्मिल्लाह से शुरू करना, दोनों हाथों को गटटों तक तीन बार धोना, मिस्वाक करना, दाहिने हाथ से तीन कुल्लियाँ करना, दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाना, बायें हाथ से नाक साफ़ करना, दाढ़ी का खिलाल करना, हाथ पाँव की उंगलियों का खिलाल करना, हर उज़्व(हिस्से) को तीन बार धोना, पूरे सर का एक बार मसह करना, कानों का मसह करना, तरतीब (यानि पहले गटटों तक हाथ धोना फिर कुल्ली करना, फिर नाक में पानी चढ़ाना आदि) से वुजू करना, दाढ़ी के जो बाल मूँह के दायरे के नीचे हैं उनका मसह करना, आज़ा को पैदरपै (एक के बाद एक लगातार) धोना, हर मकरूह बात से बचना।

सवाल : वुज़ू में कितनी बातें मकरूह हैं ?

जवाब : वुज़ू में ये बातें मकरूह हैं. औरत के ग़ुस्ल या वुज़ू के बचे हुये पानी से वुज़ू करना, वुज़ू के लिये नजिस (नापाक) जगह बैठना, नजिस जगह वुज़ू का पानी गिराना, मस्जिद के अन्दर वुज़ू करना, वुज़ू के आज़ा से बरतन में पानी के क़तरे टपकाना, क़िबला की तरफ़ थूक या खंखार डालना या कुल्ली करना, बे ज़रूरत दुनिया की बातें करना, ज़रूरत से ज़्यादा पानी खर्च करना, पानी इस कद्र कम खर्च करना कि सुन्नत अदा न हो, मूँह पर पानी मारना, मूँह पर पानी डालते वक्त फूँकना, सिर्फ एक हाथ से मूँह धोना, गले का मसह करना, बायें हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी डालना, दाहिने हाथ से नाक साफ़ करना, अपने लिये कोई लोटा वग़ैरह ख़ास़ कर लेना, तीन नये पानियों से तीन बार सर का मसह करना, किसी सुन्नत को छोड़ देना।

सवाल : किन चीज़ों से वुज़ू टूट जाता हे ?

जवाब : पाखाना या पेशाब करना, पाखाना या पेशब के रास्ते से किसी और चीज़ का निकलना, पाखाने के रास्ते से हवा का निकलना, बदन के किसी मक़ाम से खून या पीप का निकल कर ऐसी जगह बहना कि जिसका वुज़ू या ग़ुस्ल मे धोना फ़र्ज है, खाना पानी या सफ़रा की मूँह भर कै (उल्टी) आना,इस तरह सो जाना कि कि जिस्म के जोड़ ढीले पड़ जायें, बेहोश होना, जुनून होना, ग़शी होना, किसी चीज़ का इतना नशा होना कि चलने में पाँव लड़खड़ायें, रूकु और सजदे वाली नमाज़ मे इतनी ज़ोर से हंसना कि आस पास वाले सुनें, दुखती आँख से आँसू बहना, इन तमाम बातों से वुज़ू टूट जाता है।

सवाल : किस काम के लिये वुज़ू करना फ़र्ज है ?

जवाब : नमाज़, सजदए तिलावत, नमाज़े जनाज़ा और कुरआन शरीफ़ छूने के लिये वुज़ू करना फ़र्ज़ है।

सवाल : किस काम के लिये वुज़ू करना वाजिब है ?

जवाब : तवाफ के लिये वुज़ू करना वाजिब है।

सवाल : किस काम के लिये वुज़ू करना सुन्नत है ?

जवाब : अज़ान, इक़ामत (तकबीर), जुमा, ईदैन, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की ज़ियारत, अ़रफ़ा में ठहरने और सफ़ा व मरवा के दरमियान सई के लिये वुज़ू करना सुन्नत है।

गुस्ल(नहाने) का बयान

सवाल : गुस्ल मे कितने फ़र्ज़ हैं और कौन कौन से ?
जवाब : गुस्ल में तीन फ़र्ज़ हैं.
(1) **कुल्ली करनाः** मूँह के हर गोशे होंट से ह़ल्क़ की जड़ तक हर जगह पानी बह जाये, अकसर लोग ये जानते हैं कि थोड़ा सा पानी मूँह में लेकर उगल देने को कुल्ली कहते हैं अगर्चे ज़ुबान की जड़ और ह़ल्क़ के किनारे तक न पहुँचे, ऐसे गुस्ल न होगा, बल्कि फर्ज़ है कि दाड़ी के पीछे गालों की तह में दाँतों की जड़ और खिड़कियों में ज़ुबान की हर करवट में ह़ल्क़ के किनारे तक पानी बहे।
(2) **नाक मे पानी डालनाः** यानि दोनों नथनों में जहाँ तक नर्म जगह है धुलना कि पानी को सूंघ कर ऊपर चढ़ाये बाल बराबर भी धुलने से न रह जाये, नहीं तो गुस्ल नहीं होगा, अगर नाक के अन्दर रेंठ सूख गई है तो उसका छुड़ाना फर्ज़ है।
(3) **तमाम बदन पर पानी बहानाः** यानि सर के बालों से पाँवों के तलवों तक जिस्म के हर गोशे हर रोंगटे पर पानी बह जाना फर्ज़ है, अकसर लोग यह करते हैं कि सर पर पानी डालकर जिस्म पर हाथ फेर लेते हैं और समझते हैं कि गुस्ल हो गया, हालांकि कुछ उज़्व (हिस्से) ऐसे हैं कि जब तक उनकी ख़ास़ तौर पर एह़तियात़ न की जाये तो नही धुलेंगें और गुस्ल न होगा।
सवाल : गुस्ल करने का तरीक़ा किया है ?
जवाब : गुस्ल करने का तरीक़ा यह है कि पहले गुस्ल की नियत करके दोनों हाथ तीन बार धोये फिर इस्तिन्जा की जगह धोये उसके बाद बदन पर अगर कहीं निजासत हो तो उसे दूर करे फिर नमाज़ जैसा वुज़ू करे मगर पाँव न धोये अगर चौकी या पथ्थर वग़ैरह ऊँची चीज़ पर नहाये तो पाँव भी धोले, उसके बाद बदन पर तेल की तरह पानी चुपड़े फिर तीन बार दाहिने कन्धे पर पानी बहाये और फिर तीन बार बायें कन्धे पर पानी बहाये फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाये, तमाम बदन पर हाथ फेरे और मले फिर नहाने के बाद फौरन कपड़े पहन ले।

तयम्मुम का बयान

सवाल : तयम्मुम करना कब जाएज़ है ?

जवाब : जब पानी पर क़ुदरत न हो तब तयम्मुम जाएज़ है।

सवाल : पानी पर क़ुदरत न होने की क्या सूरत है ?

जवाब : पानी पर क़ुदरत न होने की ये सूरत है कि ऐसी बीमारी हो कि वुज़ू या ग़ुस्ल से उसके ज़्यादा होने या देर में अच्छा होने का सही अन्देशा हो चाहे उसने ख़ुद आज़माया हो कि जब वुज़ू और ग़ुस्ल करता है तो बीमारी बढ़ जाती है या ये कि किसी मुसलमान अच्छे लाइक़ हकीम ने जो बज़ाहिर फ़ासिक़ न हो यह कह दिया हो कि पानी नुक़सान करेगा, या ऐसे मक़ाम पर मौजूद हो कि वहाँ चारों तरफ़ एक एक मील तक पानी का पता न हो, या इतनी सर्दी हो कि नहाने से मर जाने या बीमार होने का सख्त खतरा हो, या दुश्मन का डर हो कि अगर उसने देख लिया तो मार डालेगा या माल छीन लेगा, या प्यास का डर हो यानि उसके पास पानी मौजूद है मगर वुज़ू या ग़ुस्ल के काम में लाये तो खुद या दूसरा मुसलमान या उसका जानवर अगर्चे वो कुत्ता ही हो जिसका पालना जाएज़ है प्यासा रह जायेगा तो तयम्मुम जाएज़ है और अगर यह गुमान हो कि पानी तलाश करने में रेल छूट जायेगी तो भी तयम्मुम जाएज़ है।

सवाल : तयम्मुम में कितने फ़र्ज़ है ?

जवाब : तयम्मुम में तीन फ़र्ज़ हैं (1) नियत करना (2) सारे मूँह पर हाथ फेरना (3) दोनों हाथों का कोहनियों समेत मसह करना।

सवाल : तयम्मुम करने का तरीक़ा क्या है ?

जवाब : तयम्मुम करने का तरीक़ा यह है कि दोनो हाथों की उंगलियाँ कुशादा करके यानि फैला कर किसी ऐसी चीज़ पर जो ज़मीन की क़िस्म से हो मारे अगर ज़्यादा गर्द लग जाये तो झाड़ ले और उससे सारे मूँह का मसह करे फिर दूसरी बार दोनों हाथ ज़मीन पर मारकर दाहिने हाथ का बायें हाथ से और बायें हाथ का दाहिने हाथ से कोहनियों समेत मसह करे।

सवाल : तयम्मुम का यह तरीक़ा वुज़ू के लिये है या ग़ुसल के लिये ?

जवाब : तयम्मुम का यह तरीक़ा वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों के लिये है।

सवाल : अगर वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों का तयम्मुम करना हो तो हर एक के लिये अलग अलग तयम्मुम करना पढ़ेगा या एक ही तयम्मुम दोनों के लिये काफ़ी है ?
जवाब : दोनों के लिये एक ही तयम्मुम काफ़ी है।

नजासत का बयान

सवाल : नजासत की कितनी क़िस्में हैं ?
जवाब : नजासत की दो क़िस्में हैं (1) नजासते ग़लीज़ा (2) नजासते ख़फ़ीफ़ा।
सवाल : नजासते ग़लीज़ा क्या चीज़ हैं ?
जवाब : इन्सान के बदन से ऐसी चीज़ निकले कि उससे वुज़ू या ग़ुस्ल वाजिब हो जाता हो तो वह नजासते ग़लीज़ा है जैसे पाख़ाना, पेशाब, बहता ख़ून, पीप मूँह भर क़ै, और दुखती आँख का पानी वगैरह। और हराम चौपाये जैसे कुत्ता, शेर, लोमड़ी, बिल्ली, चुहा, गधा, खच्चर, हाथी और सुअर वग़ैरह का पाखना पेशाब और घोड़े की लीद और हर ह़लाल चौपाये का पाखना जैसे गायें भैंस का गोबर, बकरी और ऊँट की मिंगनी, मुर्ग़ और बत्तख़ की बीट और शेर, कुत्ते वग़ैरह दरिन्दे चौपायों का लुआ़ब यह सब चीज़े नजासते ग़लीज़ा हैं।
सवाल : नजासते ख़फ़ीफा क्या चीज़ हैं ?
जवाब : जिन जानवरों का गोश्त ह़लाल है जैसे गाये,बैल,भैंस,बकरी और भेड़ वग़ैरह इनका पेशाब, घोड़े का पेशाब और जिस परिन्द का गोश्त हराम हो जैसे कौआ, चील, शिकरा, और बाज़ वग़ैरह की बीट ये सब नजासते ख़फ़ीफ़ा हैं।
सवाल : अगर नजासते ग़लीज़ा बदन या कपड़े पर लग जाये तो क्या हुक्म है ?
जवाब : अगर नजासते ग़लीज़ा कपड़े या बदन में एक दिरहम से ज़्यादा लग जाये तो उसका पाक करना फ़र्ज़ है अगर बग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ होगी ही नहीं और अगर नजासते ग़लीज़ा एक दिरहम के बराबर लग जाये तो उसका पाक करना वाजिब है अगर बग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ मकरूहे तहरीमी हुई यानि ऐसी नमाज़ का दोबारा पढ़ना वाजिब है और अगर नजासते ग़लीज़ा एक दिरहम से कम लगी है तो उसका पाक करना सुन्नत है अगर बग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ हो गई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुई ऐसी नमाज़ का दोबारा पढ़ना बेहतर है।

सवाल : अगर नजासते ख़फ़ीफ़ा लग जाये तो क्या हुक्म है ?
जवाब : नजासते ख़फ़ीफ़ा कपड़े या बदन के जिस हिस्से में लगी है अगर उसकी चौथाई से कम है जैसे दामन मे लगी है तो दामन की चौथई से कम है या आस्तीन में लगी है तो आस्तीन की चौथाई से कम है तो माफ़ है और अगर पूरी चौथाई में लगी हो तो बग़ैर धोये नमाज़ न होगी।

नमाज़ का बयान

सवाल : नमाज़ किस पर फ़र्ज़ है ?
जवाब : नमाज़ हर आ़क़िल बालिग़ पर फ़र्ज़ है, इसकी फ़र्ज़ियत का इनकार करने वाला काफ़िर है और जो क़स्दन (जानबूझ कर) नमाज़ छोड़े अगर्चे एक ही वक़्त की वह फ़ासिक़ है और जो नमाज़ न पढ़ता हो क़ैद किया जाये यहाँ तक कि तौबा करे और नमाज़ पढने लगे।
सवाल : नमाज़ की अहमियत और फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?
जवाब : क़ुर्आन मजीद और अहादीसे करीमा मे जगह जगह इसकी फ़जीलतो अहमियत बयान की गई है, अल्लाह तआ़ला इरशाद फरमाता है

“ यह किताब परहेज़गारों को(के लिये) हिदायत है जो ग़ैब पर ईमान लाते और नमाज़ क़ाइम रखते और हमने जो दिया उसमें से हमारी राह में ख़र्च करते हैं ” (पारा:1, रूकू:1)

और फ़रमाता है

“ नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो और रूकू करने वालों के साथ रूकू करो ” (पारा:1, रूकू:5)

और फ़रमाता है

“ तमाम नमाज़ों ख़ुसूसन बीच वाली नमाज़ (अ़स्र) की मुहाफ़ज़त रखो और अल्लाह के हज़ूर अदब से खड़े हो ” (पारा: 2,रूकु:15)

नमाज़ का बिल्कुल छोड़ देना तो सख्त हौलनाक चीज़ है। उसे क़ज़ा करके पढ़ने वालों के बारे में फ़रमाता है

“ खराबी है उन नमाज़ियों के लिये जो अपनी नमाज़ से बेखबर है वक़्त गुज़ार कर पढ़ने उठते हैं ” (पारा:30,रूकु:32)

जहन्नम में एक वादी है जिसकी सख़्ती से जहन्नम भी पनाह माँगता है उसका नाम वैल है जान बूझ कर नमाज़ कज़ा करने वाले उसके मुस्तह़िक़ हैं।
और फ़रमाता है

" उनके बाद कुछ नाख़लफ़ पैदा हुये जिन्होंने नमाज़ें ज़ाये करदीं और नफ़सानी ख्वाहिशों की इत्तिबा की अन्क़रीब वह दौज़ख में ग़य्य का जंगल पायेंगें " (पाराः16,रूकुः7)

ग़य्य जहन्नम में एक वादी है जिसकी गर्मी और गहराई सबसे ज़्यादा है उसमें एक कुआँ है जिसका नाम हबहब है जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है अल्लाह तआला उस कुएँ को खोल देता है जिससे वह बदस्तूर भड़कने लगती है।
अहादीसे करीमा मे भी नमाज़ की अहमियत और नमाज़ न पढ़ने पर सख्त वईदें सुनाई गई हैं। उनमें से कुछ ह़दीसें यहाँ ज़िक्र की जा रही हैं

ह़दीसः हज़रत इब्ने उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है इस बात की शहादत देना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मअ़बूद (पूजने के लाइक़) नहीं और मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस के ख़ास बन्दे और रसूल है और नमाज़ काइम करना और ज़कात देना और हज करना और माहे रमज़ान के रोज़े रखना (बुखारी)

ह़दीसः हज़रत अबू हुरैरा रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया बताओ तो किसी के दरवाज़े पर नहर हो वह उसमें हर रोज़ पाँच बार नहाये क्या उसके बदन पर मैल रह जायेगा? अर्ज़ की न, फ़रमाया यही मिसाल पाँच नमाज़ों की है कि अल्लाह तआ़ला इसके सबब ख़ताओ़ को मिटा देता है। (बुख़ारी)

ह़दीसः हज़रत उमर रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि एक साहब ने अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह ! इस्लाम में सबसे ज़्यादा अल्लाह के नज़दीक महबूब क्या चीज़ है। फ़रमाया वक़्त में नमाज़ अदा करना और जिसने नमाज़ छोड़ दी उसका कोई दीन नहीं, नमाज़ दीन का सुतून है। (बैहक़ी)

ह़दीसः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि नमाज़ दीन का

सुतून है जिसने इसे क़ाइम रखा उसने दीन को क़ाइम रखा और जिसने इसको छोड़ दिया उसने दीन को ढा दिया। (मुनियतुल मुसल्ली)

ह़दीसः फ़रमाने नबवी है कि हर चीज़ के लिये एक अलामत (पहचान) होती है ईमान की अलामत नमाज़ है। (मुनियतुल मुसल्ली)

ह़दीसः हज़रत अबू सईद रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ी जहन्नम के दरवाज़े पर उसका नाम लिख दिया जाता है। (अबू नईम)

ह़दीसः हज़रत नौफ़ल इब्ने मुआ़विया रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते है कि जिसकी नमाज़ फ़ौत हुई (छूट गई) गोया (तो ऐसा है कि)उसके अहल व माल जाते रहे। (बुखारी)

सवाल : नमाज़ की कितनी शर्तें हैं और कौन कौन सी ?

जवाब : नमाज़ की छः शर्तें हैं

(1) **तहारतः** यानि नमाज़ी के बदन उसके कपड़े और नमाज़ पढ़ने की जगह का पाक होना।

(2) **सत्रे औरतः** यानि बदन का वह हिस्सा जिसका छुपाना फ़र्ज़ है उसको छुपाना।

(3) **इस्तिक़बाले क़िब्लाः** यानि नमाज़ मे क़िब्ले की तरफ़ मूँह करना।

(4) **वक़्तः** यानि जिस वक़्त की नमाज़ पढ़ी जाये उस नमाज़ का वक़्त होना।

(5) **नियतः** नियत दिल के पक्के इरादे को कहते है, ज़ुबान से नियत करना मुस्तहब है।

(6) **तकबीरे तहरीमाः** यानि अल्लाहु अकबर कहकर नमाज़ शुरू करना।

सवाल : नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा क्या है ?

जवाब : नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा यह है कि बा वुज़ू काबे की तरफ़ को मूँह करके दोनें पाँवों के पन्जों में चार उन्गल का फ़ासला करके खड़ा हो और दानों हाथ कानों तक ले जाये इस हाल में कि अंगूठे कान की लौ से छू जायें और उंगलियाँ न मिली हुये रखे और न खूब खोले हुये बल्कि अपनी हालत पर हों और हथेलियाँ काबे की तरफ़ को हों फिर नियत करके अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ नीचे लाकर नाफ़ के नीचे बाँध ले इस तरह कि दाहिनी हथेली की गद्दी बायीं कलाई के सिरे पर हो

और बीच की तीन उंगलियाँ बायीं कलाई की पुश्त परऔर अंगूठा और छुंगलिया कलाई के अग़ल बग़ल हों और सना यानि

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ وَ تَبَارَکَ اسْمُکَ وَ تَعَالٰی جَدُّکَ وَ لَا اِلٰہَ غَیْرُکَ

''सुब्हा न कल्लाहुम्मा वबि हमदि क वतबा र कसमु क वतआ़ला जददु क वला इला ह ग़ैरुक''. पढ़े फिर तअ़व्वुज़ यानि اَعُوْذُ بِا للّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ पढ़े

फिर तसमिया यानि بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़े, फिर सूरह फ़ातिहा (अल्हम्द शरीफ़) पढ़े

अल्हम्द शरीफ़ यह है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ.اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ.مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ. اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ.اِھْدِنَاالصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ.صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ.

और ख़त्म पर आहिस्ता से आमीन कहे इसके बाद कोई सूरत या तीन आयतें पढ़े या एक आयत जो कि छोटी तीन आयतों के बराबर हो। अब अल्लाहु अकबर कहता हुआ रूकू में जाये और घुटनों को हाथ से पकड़े इस तरह कि हथेलियाँ घुटने पर हों और उंगलियाँ खूब फैली हों इस तरह नही कि सब उंगलियाँ एक तरफ़ हों और न इस तरह कि चार उंगलियाँ एक तरफ़ हों और एक तरफ़ सिर्फ़ अंगूठा। और पीठ बिछी हो और सर पीठ के बराबर हो ऊँचा नीचा न हो और कम से कम तीन बार

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْمُ ''सुब्हा न रब्बियल अ़ज़ीम'' पढ़े फिर

سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہ ''समि अ़ल्लाहु लिमन हमिदह'' कहता हुआ सीधा खड़ा

हो जाये और अकेले नमाज़ पढ़ता हो तो इसके बाद اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَ لَكَ الْحَمْدُ ''अल्लाहुम्मा रब्बना व लकल हम्द'' कहे फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदे में जाये इस तरह कि पहले घुटने ज़मीन पर रखे फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच मे नाक फिर पेशानी रखे इस तरह कि पेशानी और नाक की हड्डी ज़मीन पर जमाये और बाज़ुओं को करवटों और पेट को रानों और रानों को पिन्डलियों से जुदा रखे और दोनो पाँवों की सब उंगलियो के पेट किबला-रू जमे हों और हथेलियाँ बिछी हों और उंगलियाँ किबले को हों और कम से कम तीन बार

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی ''सूबहा न रब्बियल अ़अ़ला'' कहे फिर सर उठाये फिर हाथ और दाहिना क़दम खड़ा करके उसकी उंगलियाँ क़िबला रूख करे और बायाँ क़दम बिछा कर खूब सीधा बैठ जाये और हथेलियाँ बिछा कर रानों पर घुटनों के पास रखे फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदे में जाये और पहले की तरह सजदा करके फिर सर उठाये फिर हाथ को घुटने पर रखकर पंजो के बल खड़ा हो जाये और अब सिर्फ़ बिस्मिल्लाह पढ़ कर किरात शुरू करदे फिर पहले की तरह रूकू सजदा करके दाहिना क़दम खड़ा करके और बायाँ क़दम बिछा कर बैठ जाये और यह पढ़ेः

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَ الصَّلٰوۃُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَ
رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادَ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ
اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

''अत्तहि़य्यातु लिल्लाहि वस सलावातु वत तय्यिबातु अस्सलामु अ़लै क अय्युहन नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब रकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल लाहिस्सालिहीन अशहदु अल ला इला ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन न मुहम्मदन अबदुहू वरसूलुह''. अब अगर दो से ज़्यादा रकअ़तें पढ़नी हैं तो उठ खड़ा हो और इसी तरह पढ़े मगर फ़र्ज़ों की इन रकअ़तों में सुरह फ़ातिहा (अल्हम्द शरीफ़) के साथ सूरत मिलाना ज़रूरी नहीं। अब पिछला क़अ़दा जिसके बाद नमाज़ ख़त्म करेगा उसमें तशहूहुद (अत्तहिय्यात) के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़े। दुरूद शरीफ़ यह हैः

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيمَ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. اَللّٰهُمَّ
بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى
سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيمَ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

''अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन व अ़ला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा सल्लै त अ़ला सय्यिदिना इब्राही म व अ़ला आलि सय्यिदिना इब्राही म इन न क हमीदुम मजीद अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन व अ़ला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा बारक त अ़ला सय्यिदिना इब्राही म व अ़ला आलि सय्यिदिना इब्राही म इन न क हमीदुम मजीद''.

उसके बाद यह दुआ़ पढ़े: اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ. ''अल्लाहुम्मा रब्बना आतिना फ़िद दुनया ह़सनतौं व फ़िल आख़िरति हसनतौं व क़िना अ़ज़ाबन नार''.

फिर दाहिने कन्धे की तरफ़ मूँह करके اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ ''अस्सलामु अ़लैयकुम व रहमतुल्लाह''. कहे फिर बायीं कन्धे की तरफ़ मूँह करके इसी तरह कहे।

यह तरीका इमाम या अकेले मर्द के पढ़ने का है, मुक़तदी इसमें की कुछ बातों में अलग है जैसे इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहा या और कोई सुरत पढ़ना कि यह मुक़तदी को जाइज़ नहीं। इसी तरह औरतें भी कुछ बातों मे अलग हैं जैसे औरतें तकबीरे तहरीमा के वक़्त हाथ कानों तक न ले जायें बल्कि सिर्फ़ कन्धों तक उठायें हाथ नाफ़ के नीचे न बाँधें बल्कि बायीं हथेली सीने पर रख कर उसकी पीठ पर दाहिनी हथेली रखें, रूकू में ज़्यादा न झुकें बल्कि सिर्फ़ इतना झुकें कि हाथ घुटनों

तक पहुँच जायें, पीठ सीधी न करें और न घुटनों पर ज़ोर दें, सजदे में जायें तो बाज़ू करवटों से मिला दें और पेट रान से और रान पिन्डलियों से और पिन्डलियाँ ज़मीन से और कअ़दे में बायें कदम पर न बैठें बल्कि दोनो पाँव दाहिनी तरफ़ निकालदें और सुरीन पर बैठें।

सवाल : नमाज़ में कितने फ़र्ज़ हैं और कौन कौन से ?

जवाब : नमाज़ में सात फ़र्ज़ हैं

(1) **तकबीरे तहरीमाः** यानि अल्लाहु अकबर कहकर नमाज़ शुरू करना।

(2) **क़ियामः** यानि नमाज़ में खड़ा होना उसकी कम से कम हद यह है कि अगर हाथ फैलाये तो घूटनों तक न पहुँचें, इतनी देर खड़ा होना फ़र्ज़ है जितनी देर मे फ़र्ज़ की मिक़दार किरात की जा सके।

(3) **क़िरातः** यानि नमाज़ में कुरान शरीफ़ का इस तरह पढ़ना कि तमाम हुरूफ़ अपने मख़रज (जहाँ से हर्फ़ निकलता है उसे मख़रज कहते हैं) से सही तौर से अदा किये जायें कि हर हर्फ़ अपने ग़ैर से सही तौर पर मुमताज़ (जुदा) हो जाये।

(4) **रूकुः** यानि इतना झुकना कि हाथ बढ़ाये तो घुटनों तक पहुँच जायें यह रूकू का अदना (सबसे कम) दर्जा है रूकू का कामिल दर्जा यह है कि पीठ सीधी बिछा दे।

(5) **सुजूदः** यानि हर रकअ़त में दो सजदे करना इस तरह कि पेशानी, नाक, दोनों हाथ की हथेलियाँ, दोनों घुटने और दोनों पाँवों की उंगलियाँ और नाक की हठ्ठी ज़मीन से लग जायें। पेशानी का ज़मीन पर जमना सजदे की ह़क़ीक़त है।

(6) **कअ़दए अख़ीराः** यानि आखिरी कअ़दा कि जिसके बाद सलाम फेरकर नमाज़ पूरी की जाती है।

(7) **खुरूजे बिसुनएहीः** यानि अपने इरादे से नमाज़ खत्म करना।

सवाल : नमाज़ में क्या क्या चीज़ें वाजिब हैं ?

जवाब : नमाज़ में यह चीज़ें वाजिब है। तकबीरे तहरीमा में लफ्ज़े अल्लाहु अकबर कहना,अल्हम्द पढ़ना उसकी हर एक आयत मुस्तक़िल वाजिब है उनमें एक आयत का छोड़ना बल्कि एक लफ्ज़ का छोड़ना भी वाजिब का छोड़ना है, सूरत मिलाना यानि एक छोटी सूरत या तीन छोटी आयतों का अल्हम्द शरीफ़ के बाद पढ़ना या

एक या दो आयतें जो छोटी तीन आयतों के बराबर हों पढ़ना, सूरह फ़ातिहा का सूरत से पहले होना, क़िरात के बाद फ़ौरन रूकू करना, एक सजदे के बाद दूसरा सजदा करना, तादीले अरकान(इत्मिनान से अरकान अदा करना) यानि रूकू व सुजूद में व क़ियाम व जलसें में कम अज़ कम एक बार सुब्हानल्लाह कहने की मिक़दार ठहरना, क़ौमा यानि रूकू से सीधा खड़ा होना, जलसा यानि दानों सजदों के दरमियान सीधा बैठना, कअ़दए ऊला अगर्चे नमाज़ नफ्ल हो,दोनें कअ़दों में पूरी अत्तहिय्यात पढ़ना इसी तरह जितने कअ़दे करने पड़ें सब में पूरी अत्तहिय्यात वाजिब है, एक लफ़्ज़ का छोड़ना भी वाजिब का छोड़ना होगा, लफ़्ज़े अस्सलामु दो बार वाजिब अ़लैकुम वाजिब नहीं, वित्र में दुआ़ए कुनूत पढ़ना, तकबीरे कुनूत यानि दुआ़ऐ कुनूत से पहले तकबीर कहना, हर फ़र्ज़ व वाजिब का उसकी जगह पर होना, रूकू का हर रकअ़त में एक ही बार होना, यानि एक से ज़्यादा रूकू न करना, सुजूद का दो बार ही होना यानि दो से ज़्यादा सजदे न करना।

सवाल : नमाज़ में क्या क्या चीज़ें सुन्नत हैं ?

जवाब : नमाज़ में यह चीज़ें सुन्नत हैं. तकबीरे तहरीमा के लिये हाथ उठाना और हाथों की उंगलियाँ अपने हाल पर छोड़ना, तकबीर के वक़्त सर न झुकाना और हाथेलियों और उंगलियों के पेट का काबे की तरफ़ होना, तकबीर से पहले हाथ उठाना इसी तरह तकबीरे कुनूत व तकबीराते ईदैन में कानो तक हाथ ले जाने के बाद तकबीर कहना, औरत को सिर्फ़ काँधों तक हाथ उठाना, इमाम का अल्लाहु अकबर, समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह और सलाम बुलन्द आवाज़ से कहना, तकबीर के बाद हाथ लटकाए बग़ैर फ़ौरन बाँध लेना, सना, तअ़व्वुज़ और तसमिया पढ़ना और आमीन कहना और इन सबका आहिस्ता होना, पहले सना पढ़ना फिर तअ़व्वुज़ फिर तसमिया और हर एक के बाद दूसरे को फौरन पढ़ना, रूकू में तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمُ कहना और घुटनों को हाथों से पकड़ना और उंगलियाँ खूब खुली रखना, औरत को घुटने पर हाथ रखना, और उंगलियाँ खुली हुई न रखना, रूकू की हालत में पीठ खूब बिछी रखना, रूकू से उठने पर हाथ लटका हुआ छोड़ देना, रूकू से उठने में इमाम को سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَه कहना और

मुक़्तदी को اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ कहना और अकेले पढ़ने वाले को दोनों कहना, सजदे के लिये और सजदे से उठने के लिये अल्लाहु अकबर कहना, सजदे में कम से कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى कहना, सजदा करने के लिये पहले घुटना फिर हाथ फिर नाक फिर पेशानी ज़मीन पर रखना और सजदे से उठने के लिये पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथ फिर घुटना ज़मीन से उठाना, सजदे में बाजु करवटों से और पेट रानों से अलग होना और कलाइयाँ ज़मीन पर न बिछाना, औरत का बाज़ू करवटों से, पेट रान से , रान पिन्डलियों से और पिन्डलियाँ ज़मीन से मिला देना, दोनों सजदों के दरमियान बैठना और हाथों को रानों पर रखना, सजदों मे हाथों की उंगलियाँ काबे की तरफ़ होना और मिली हुई होना, पाँवों की दसों उंगलियों के पेट ज़मीन पर लगना, दूसरी रकअ़त के लिये पन्जों के बल घुटनों पर हाथ रखकर उठना, कअ़दें में बायाँ पाँव बिछा कर दोनों सुरीन उस पर रखकर बैठना, दाहिना क़दम खड़ा रख़ना, और दाहिने क़दम की उंगलियाँ क़िब्ला रूख होना, औरत को दोनों पाँवों दाहिनी जानिब निकाल कर बायीं सुरीन पर बैठना, दाहिना हाथ दाहिनी रान पर और बायाँ हाथ बायीं रान पर रखना और उंगलियों को अपनी हालत पर छोड़ना, शहादत पर इशारा करना, कअ़दए अख़ीरा में अत्तहिय्यात के बाद दरूद शरीफ़ और दुआ़ए मासूरह पढ़ना।

सवाल : नमाज़ में क्या क्या चीज़े मकरूह हैं ?

जवाब : नमाज़ में यह चीज़ें मकरूह हैं. कपड़े बदन या दाढ़ी के साथ खेलना, कपड़ा समेटना जैसे सजदे मे जाते वक़्त आगे या पीछे से उठा लेना, कपडा लटकाना यानि सर या काँधे पर इस तरह डालना कि दोनों किनारे लटकते हों, किसी आस्तीन का आधी कलाई से ज़यादा चढ़ाना, दामन समेट कर नमाज़ पढ़ना, मर्द का जोड़ा बाँधे हुये नमाज़ पढ़ना, उंगलियाँ चटकाना, उंगलियों की कैंची बाँधना, कमर पर हाथ रखना, आसमान की तरफ़ निगाह उठाना, मर्द का सजदे मे कलाइयों का बिछाना, किसी शख़्स के मूँह के सामने नमाज़ पढ़ना, कपड़े में इस तरह लिपट जाना कि हाथ भी बाहर न हों, पगड़ी इस तरह बाँधना कि बीच सर पर न हो, नाक और मूँह को छुपाना, जिस कपड़े पर जानदार की तस्वीर हो उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना,

तस्वीर का नमाज़ी के सर पर यानि छत पर होना या लटकी हुई होना या सजदे की जगह पर होना कि उस पर सजदा किया जाये, नमाज़ी के आगे या दाहिने या बायें या पीछे तस्वीर का होना इस तरह कि लटकी हुई हो या दीवार वग़ैरह में मनकूश हो, उल्टा क़ुर्आन मजीद पढ़ना, किरात को रूकू में खत्म करना, इमाम से पहले मुक़्तदी का रूकू व सुजूद वग़ैरह में जाना या उससे पहले सर उठाना। यह तमाम बातें मकरूहे तहरीमी हैं।

वित्र का बयान

सवाल : वित्र क्या है ?

जवाब : वित्र वाजिब है अगर भूल कर या जान बूझ कर न पढ़े तो क़ज़ा वाजिब है।

सवाल : वित्र की नमाज़ किस तरह पढ़ी जाती है ?

जवाब : वित्र की नमाज़ भी उसी तरह पढ़ी जाती है जिस तरह और नमाज़ें पढ़ी जाती हैं लेकिन वित्र की तीसरी रकअ़त में अल्हम्द और सूरत पढ़ने के बाद कानों तक दोनों हाथ ले जाये और अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ वापस लाये और नाफ़ के नीचे बाँध ले फिर दुआ़ए क़ुनूत पढ़े फिर उसके बाद और नमाज़ों की तरह रूकू और सजदा वग़ैरह करके सलाम फेर दे। दुआ़ऐ क़नूत यह हैः

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ
وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ
اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ
وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ.

नफ़िल नमाज़ों का बयान

सवाल : कुछ नफ़िल नमाज़ों की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब : **नमाज़े इशराक़ः** हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो फ़ज्र की

नमाज़ जमाअ़त से पढ़ कर खुदा का ज़िक्र करता है यहाँ तक कि सूरज निकल कर ऊँचा हो जाये फिर दो रकअ़त नमाज़े इशराक़ पढ़े तो उसे पूरे हज और उमरे का सवाब मिलेगा।

नमाज़े चाश्तः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स चाश्त की नमाज़ पढ़ता रहे उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगें अगर्चे समन्दर के झाग के बराबर हों। चाश्त की नमाज़ कम से कम दो रकअ़त और ज़्यादा से ज़्यादा बारह रकअ़तें हैं और इसका वक़्त आफ़ताब बुलन्द होने से ज़वाल तक है।

नमाज़े तहज्जुदः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स रात में बेदार हो और अपने अहल को जगाये फिर दोनो दो दो रकअ़त पढ़ें तो कसरत से याद करने वालों मे लिखे जायेगें। तहज्जुद की नमाज़ का वक़्त इशा की नमाज़ पढ़ कर सो जाने के बाद उठने के वक़्त से फ़ज्र का वक़्त शुरू होने से पहले तक रहता है। इसकी कम से कम दो रकअ़तें और ज़्यादा से ज़्यादा आठ रकअ़तें हैं।

नोटः जिनके ज़िम्में फ़र्ज़ नमाजें बाक़ी हैं वह नफ़िल नमाज़ की जगह पहले अपनी फ़र्ज़ नमाजों की क़ज़ा पढ़ें।

सजदए सहव का बयान

सवाल : सजदए सहव किसे कहते हैं ?

जवाब : कभी नमाज़ मे भूल से कोई ख़ास ख़राबी पैदा हो जाती है उस खराबी को दूर करने के लिये क़अ़दए अख़ीरा में दो सजदे किये जाते हैं उनको सजदए सहव कहते हैं।

सवाल : किन बातों से सजदए सहव वाजिब होता है ?

जवाब : जो बातें नमाज़ में वाजिब हैं उनमें से किसी एक के भूल कर छूट जाने से सजदए सहव वाजिब होता है जैसे फ़र्ज़ की पहली या दूसरी रकअ़त में अल्हम्द या सूरत पढ़ना भूल गया या अल्हम्द से पहले सूरत पढ़ दी तो इन सूरतों में सजदए सहव करना वाजिब होता है।

सवाल : सजदए सहव का तरीका क्या है ?

जवाब : सजदए सहव का तरीक़ा यह है कि आख़िरी क़अदे में अत्तहिय्यात वरसूलुहू तक पढ़ने के बाद सिर्फ़ दाहिनी जानिब सलाम फेर कर दो सजदे करे फिर

अत्तहिय्यात और दुरूद शरीफ़ वग़ैरह पढ़ कर सलाम फेर दे।
सवाल : फ़र्ज़ और सुन्नत के छूट जाने से सजदए सहव वाजिब होता है या नही ?
जवाब : फ़र्ज़ छूट जाने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है सजदए सहव से वह सही नहीं हो सकती बल्कि दोबारा पढ़ना पड़ेगी और सुन्नत व मुस्तहिब जैसे तसमिया,सना और तअ़व्वुज़ छूट जाने से सजदए सहव वाजिब नहीं होता बल्कि नमाज़ हो जाती है मगर दोबारा पढ़ना मुस्तहब (बेहतर) है।
सवाल : किसी वाजिब को जान बूझ कर छोड़ दिया तो सजदए सहव से नमाज़ हो जायेगी या नहीं ?
जवाब : अगर किसी वाजिब को जान बूझ कर छोड़ दिया तो सजदए सहव से नमाज़ नहीं होगी बल्कि नमाज़ को दोबारा पढ़ना वाजिब है इसी तरह अगर भूल कर किसी वाजिब को छोड़ दिया और सजदए सहव न किया जब भी नमाज़ का दोबारा पढ़ना वाजिब है।

नमाज़े जनाज़ा का बयान

सवाल : नमाज़े जनाज़ा क्या है ?
जवाब : नमाज़े जनाज़ा फ़र्जे किफ़ाया है कि अगर एक ने भी पढ़ ली तो सब ज़िम्मेदारी से बरी हो गये और अगर किसी ने न पढ़ी तो जिस जिस को ख़बर पहुँची थी सब गुनहगार हुये।
सवाल : नमाज़े जनाज़ा में कितने फ़र्ज़ हैं और कौन कौन से ?
जवाब : नमाज़े जनाज़ा में दो फ़र्ज़ हैं (1) चार तकबीरें कहना (2) क़ियाम यानि खड़ा होना।
सवाल : नमाज़े जनाज़ा में कितनी चीज़ें सुन्नते मुअक्कदा है और कौन कौन सी ?
जवाब : नमाज़े जनाज़ा मे तीन चीज़ें सुन्नते मुअक्कदा हैं (1) अल्लाह तआ़ला की सना (2) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद (3) मय्यत के लिये दुआ़।
सवाल : नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का तरीक़ा क्या है ?
जवाब : नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का तरीक़ा यह है कि पहले नियत करे किः नियत की मैं ने नमाज़े जनाज़ा की चार तकबीरों के साथ अल्लाह तआ़ला के लिये दुआ़ इस मय्यत के लिये (मुक़तदी इतना और कहे कि पीछे इस इमाम के) मूँह मेरा काबा

शरीफ़ की तरफ़ फिर कानों तक दोनों हाथ उठा कर अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ नीचे लाये और नाफ़ के नीचे बाँध ले फिर यह सना पढ़ेः

سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُکَ
وَتَعَالٰی جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَائُکَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ.

फिर बग़ैर हाथ उठाये अल्लाहु अकबर कहे और दुरूदे इब्राहीमी (वह दुरूद जो नमाज़ में पढ़ी जाती है) पढ़े फिर बग़ैर हाथ उठाये अल्लाहु अकबर कहे और बालिग़ का जनाज़ा हो तो यह दुआ़ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا
وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثٰنَا اللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى
الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ.

इसके बाद बग़ैर हाथ उठाये चौथी तकबीर कहे फिर बग़ैर कोई दुआ़ पढ़े हाथ खोल कर सलाम फेर दे। और अगर नाबालिग़ लड़के का जनाज़ा हो तो यह दुआ़ पढ़ी जायेः

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطاً وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْراً
وَّ ذُخْراً وَاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعاً وَّمُشَفَّعاً.

और अगर नाबालिग़ लड़की का जनाज़ा हो तो यह दुआ़ पढ़ी जायेः

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطاً وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْراً
وَّ ذُخْراً وَاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً.

रोज़े का बयान

सवाल : रोज़े की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब : **हदीसः** हज़रत अबू हुरैरह रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब रमज़ान आता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, एक रिवायत में है कि जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और एक रिवायत में है कि रहमत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतान ज़न्जीरो में जकड़ दिये जाते हैं और एक रिवायत में है कि जब माहे रमज़ान की पहली रात होती है तो शैतान और सरकश जिन्न कैद कर लिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं तो इनमें से कोई दरवाजा खोला नहीं जाता और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते है तो इनमें से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और मुनादी पुकारता है, ऐ खैर तलब करने वाले! मुतवज्जेह हो और ऐ शर के चाहने वाले! बाज़ रह। और कुछ लोग जहन्नम से आज़ाद होते हैं और यह हर रात में होता है। (बुख़ारी)

हदीसः सहल इब्ने सअ़द रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जन्नत में आठ दरवाज़े हैं उनमें एक दरवाज़े का नाम रय्यान है उस दरवाज़े से वही जायेंगें जो रोज़े रखते हैं। (बुख़ारी)

हदीसः हज़रत सलमान फारसी रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कहते है कि नबी सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने शाबान के आखिरी दिन में वाज़ फरमाया के '' ऐ लोगों तुम्हारे पास अज़मत वाला बरकत वाला महीना आया वह महीना जिसमें एक रात हज़ार महीनों से बेहतर है, उसके रोज़े अल्लाह तआला ने फर्ज किए और उसकी रात में कियाम (नमाज़) नफ़िल करार दिया गया है, जो इसमें नेकी का कोई काम(नफिल इबादत) करे तो ऐसा है जैसे और महीनों में फर्ज अदा किया और जिसने इसमें फर्ज अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों मे सत्तर फर्ज़ अदा किये । यह महीना सब्र का है और सब्र का सवाब जन्नत है और यह महीना मुसावात(हमदर्दी) का है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क बढ़ा दिया जाता है । जो इसमें रोज़ेदार को इफतार कराए उसके गुनाहों के लिए मग़फिरत है और उसकी

गर्दन आग से आज़ाद कर दी जायेगी और इसमें इफतार कराने वालों को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा बग़ैर इसके के उसके सवाब में कुछ कमी हो , हम (सहाबा-ए-किराम) ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ! हम में का हर शख़्स वह चीज़ नहीं पाता जिससे इफतार कराए , हुज़ूर ने फरमाया अल्लाह तआ़ला यह सवाब उस शख़्स को भी देगा जो एक घूंट दूध या एक खजूर या एक घूंट पानी से इफतार कराए और जिसने रोज़ेदार को पेट भर खाना खिलाया उसको अल्लाह तआ़ला मेरे हौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा यहाँ तक कि जन्नत में चला जाए। यह वह महीना है कि इसका अव्वल (शूरू के दस दिन) रहमत है और इसका औसत (बीच के दस दिन) मग़फिरत है और इसका आखिर (आखिर के दस दिन) जहन्नम से आज़ादी है। जो अपने ग़ुलाम पर इस महीने में तख़फ़ीफ़ करे यानी काम में कमी करे तो अल्लाह तआ़ला उसे बख़्श देगा ओर उसे जहन्नम से आज़ाद फरमाएगा'' (बैहक़ी)

ह़दीसः ह़ज़रत अबू हुरैरह रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो ईमान की वजह से और सवाब के लिये रोज़ा रखेगा उसके पिछले गुनाह बख़्श दिये जायेगें। (बुखारी)

ह़दीसः ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर रदि अल्लाहु अन्हुमा से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा और कुर्आन बन्दे के लिये शफ़ाअ़त करेगें, रोज़ा कहेगा कि ऐ रब! मैंने इसे दिन में खाने और ख्वाहिशों से बाज़ रखा मेरी शफ़ाअ़त इसके ह़क़ में क़बूल फ़रमा, कुर्आन कहेगा ऐ रब! मैंने इसे रात में सोने से रोका इसके ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा, दोनों की शफ़ाअ़तें क़बूल होंगीं। (इमाम अह़मद)

सवाल : रोज़ा किसे कहते हैं ?

जवाब : अल्लाह तआ़ला की इबादत की नियत से सुबहे सादिक़ से लेकर सूरज डूबने तक खाने पीने और जिमाअ़ से अपने आप को रोके रखने को रोज़ा कहते हैं।

सवाल : रोज़े किन लोगों पर फ़र्ज़ हैं ?

जवाब : रमज़ान शरीफ़ के रोज़े हर मुसलमान आ़क़िल बालिग़ मर्द और औरत पर

फ़र्ज़ हैं, जो इनके फ़र्ज़ होने का इनकार करे वह काफ़िर है और जो बग़ैर शरई मजबूरी के रोज़ा न रखे सख़्त गुनहगार, फ़ासिक़ और मरदूदुश्शहादत (जिसकी गवाही क़बूल न की जाये) है। नाबालिग़ पर अगर्चे रोज़ा फ़र्ज़ नहीं है मगर जब वह दस साल का हो जाये और उसमें रोज़ा रखने की ताक़त हो तो उससे रोज़ा रखवाया जाये और अगर न रखे तो मार कर रखवायें।

सवाल : किन चीज़ों से रोज़ा टूट जाता है ?

जवाब : खाने पीने से रोज़ा टूट जाता है जब्कि यह याद हो कि मेरा रोज़ा है इसी तरह रोज़ा याद होते हुये हुक्का, बीड़ी, सिगरेट पीने या सिर्फ़ तम्बाकू और सुर्ती खाने से भी रोज़ा टूट जाता है अगर्चे पीक थूक दे। कुल्ली करने में बिला इरादा पानी हलक़ से उतर गया या नाक में पानी चढ़ाया और दिमाग़ तक चढ़ गया या कान मे तेल टपकाया या नाक में दवा चढ़ाई अगर रोज़ा होना याद है तो रोज़ा टूट गया वरना नहीं, दाँतों में कोई चीज़ चने बराबर या उससे ज़्यादा थी उसे खाया या कम थी मगर मूँह से निकाल कर ख ली तो रोज़ा टूट गया। जान बूझ कर मूँह भर क़ै (उलटी) की और रोज़ा होना याद है तो रोज़ा जाता रहा और मूँह भर न हो तो रोज़ा नहीं टूटा और अगर बग़ैर इरादे के क़ै हुई और मूँह भर न हो तो रोज़ा नहीं टूटा और अगर मूँह भर हो तो लौटाने की सूरत में टूट जायेगा वरना नहीं।

सवाल : किन चीज़ों से रोज़ा नहीं टूटता ?

जवाब : भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं टूटता , तेल या सुर्मा लगाने, धुआँ या आटे का ग़ुबार ह़लक में जाने से रोज़ा नहीं टूटता, कान में पानी चला जाये तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

सवाल : किन चीज़ों से रोज़ा मकरूह हो जाता है ?

जवाब : झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गाली देने, बेहूदा बात करने और किसी को तकलीफ़ देने से रोज़ा मकरूह हो जाता है। रोज़ेदार को कुल्ली करने के लिये मूँह भर पानी लेना मकरूह है। रोज़े की हालत में खुशबू सूँघना, तेल मालिश करना और सुर्मा लगाना मकरूह नहीं, मगर मर्दों को ज़ीनत के लिये सुर्मा लगाना मकरूह है चाहे रोज़ा हो या न हो। रोज़े में मिस्वाक करना मकरूह नहीं बल्कि जैसे और दिनों में मिस्वाक सुन्नत है वैसे रोज़े में भी सुन्नत है।

ज़कात का बयान

सवाल : ज़कात की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब : **हदीसः** हज़रत अबू हुरैरह रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते है कि जिसको अल्लाह तआ़ला माल दे और वह उसकी ज़कात अदा न करे तो क़ियामत के दिन वह माल गन्जे साँप की शक्ल में कर दिया जायेगा जिसके सर पर दो चित्तियाँ होगीं वह साँप उसके गले में तौक़ बना कर डाल दिया जायेगा फिर उसकी बाँछें पकड़ेगा और कहेगा मैं तेरा माल हूँ मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ। (बुखारी)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते है कि जो शख़्स सोने और चाँदी का मालिक हो और उसका हक़ अदा न करे तो जब क़ियामत का दिन होगा उसके लिये आग के पथ्थर बनाये जायेगें और उन पर जहन्नम की आग भड़काई जायेगी और उनसे उसकी करवट, पेशानी और पीठ दाग़ी जायेगी जब ठन्डे होने पर आयेगें फिर वैसे ही कर दिये जायेगें, यह मामला उस दिन का है जिसकी मिक़दार पचास हज़ार बरस है यहाँ तक कि बन्दों के दर्मियान फ़ैसला हो जायेगा और अब वह अपनी राह देखेगा ख़्वाह जन्नत की तरफ़ जाये या जहन्नम की तरफ़ और ऊँट के बारे में फ़रमाया कि जो उसका हक़ अदा नहीं करता क़ियामत के दिन हमवार (सपाट) मैदान में लिटा दिया जायेगा और वह ऊँट सब के सब निहायत फ़रबा (मोटे) होकर आयेगें पाँव से उसे रौंदेगें और मूँह से काटेगें। जब उनकी पिछली जमाअ़त गुज़र जायेगी पहली लौटेगी और गाय और बकरियों के बारे में फ़रमाया कि उस शख़्स को हमवार मैदान में लिटायेगें और वह सब की सब आयेगीं न उनमें मुड़े हुये सीग की कोई होगी न बे-सींग की न टूटे सींग की और सींगों से मारेगीं और खुरों से रौदेगीं । (मुस्लिम)

हदीसः हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि खुश्की व तरी में जो माल तल्फ़ (बरबाद) होता है वह ज़कात न देने से तल्फ़ होता है। (तबरानी)

सवाल : ज़कात किसे कहते हैं ?

जवाब : ज़कात शरीअ़त में इसको कहते हैं कि अल्लाह के लिये अपने माल के चालीसवें हिस्से का जो शरअ़ ने मुक़र्रर किया है मुसलमान फ़कीर को मालिक कर देना और वह फ़कीर न हाशमी हो और न हाशमी का आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम और अपना नफ़ा उससे बिल्कुल अलग कर लेना यानि उससे कोई मुनाफ़ा मक़सूद न हो।

सवाल : ज़कात क्या है ?

जवाब : ज़कात फ़र्ज़ है इसकी फ़र्जियत का इनकार करने वाला काफ़िर और न देने वाला फ़ासिक़ और देने में देर करने वाला गुनहगार मरदूदुश्शहादत(जिसकी गवाही कबूल नही की जाये) है।

सवाल : ज़कात फ़र्ज़ होने की कितनी शर्तें हैं और कौन कौन सी ?

जवाब : ज़कात फ़र्ज़ होने की दस शर्तें हैं (1) मुसलमान होना (2) बालिग़ होना (3) आ़क़िल होना (4) आज़ाद होना (5) मालिके निसाब होना यानि हाजते असलिया के अलावा साढ़े सात तोला (87 ग्राम 480 मिलि ग्राम) सोना या साढ़े बावन तोला (612 ग्राम 360 मिलि ग्राम) चाँदी या उसके बराबर कीमत का मालिक होना (6) पूरे तौर पर माल का मालिक होना यानि उस पर क़ाबिज़ होना (7) निसाब का दैन (कर्ज़) से फ़ारिग़ होना (8) निसाब का हाजते असलिया से फ़ारिग़ होना (9) माले नामी होना यानि बढ़ने वाला माल होना (10) साल गुज़रना साल से मुराद क़मरी साल है।

सवाल : हाजते असलिया किसे कहते हैं ?

जवाब : ज़िन्दगी बसर करने के लिये जिस चीज़ की ज़रूरत होती है जैसे रहने का मकान, खानादारी के सामान, पेशेवरों के औज़ार, अहले इल्म के लिये हाजत की किताबें और खाने के लिये ग़ल्ला वगैरह यह सब हाजते असलिया हैं ।

सवाल : अगर किसी के पास सोना साढ़े सात तोले से कम है और चाँदी भी साढ़े बावन तोले से कम है और न माले तिजारत है और न रूपया तो उसपर ज़कात फ़र्ज़ है या नहीं ?

जवाब : चाँदी की कीमत का सोना फ़र्ज़ करने से अगर सोने का निसाब पूरा हो जाये या सोने की कीमत की चाँदी फ़र्ज़ करने से चाँदी का निसाब पूरा हो जाये तो

उस पर ज़कात फ़र्ज है वरना नहीं।

सवाल : ज़कात का माल किन लागों को दिया जा सकता है ?

जवाब : जिन लोगों को ज़कात दी जा सकती है उनमें से कुछ यह हैं.

फ़क़ीरः यानि वह शख़्स जिसके पास कुछ हो मगर इतना नहीं कि निसाब को पहुँच जाये।

मिस्कीनः यानि वह शख़्स जिसके पास कुछ न हो यहाँ तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इसका मोहताज हो कि लोगों से सवाल करे।

ग़ारिमः यानि वह शख़्स जिस पर इतना क़र्ज़ हो कि उसे निकालने के बाद निसाब बाक़ी न रहे।

फ़ीसबीलिल्लाहः यानि राहे ख़ुदा में ख़र्च करना इसकी चन्द सूरतें हैं जैसे तालिबे इल्म जो इल्मे दीन पढ़ता या पढ़ना चाहता हो उसे दे सकते हैं कि यह भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है यूँ ही हर नेक काम में ख़र्च करना फ़ीसबीलिल्लाह है जब्कि मालिक बना दिया जाये कि बग़ैर मालिक बनाये ज़कात अदा न होगी।

मुसाफ़िरः यानि वह शख़्स जिसके पास सफ़र की हालत में माल न रहा उसे बक़द्रे ज़रूरत ज़कात देना जाइज़ है।

सवाल : किन लोगों को ज़कात देना जाइज़ नहीं ?

जवाब : जिन लोगों को ज़कात देना जाइज़ नहीं उनमें से कुछ यह हैं.

मालदारः यानि वह शख़्स जो मालिके निसाब हो।

बनी हाशिमः यानि हज़रत अली, हज़रत जाफ़र, हज़रत अ़क़ील, हज़रत अ़ब्बास और हारिस इब्ने अब्दुल मुत्तलिब की औलाद।

अपनी अस्ल व फ़रअ़ः यानि माँ, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी वग़ैरहुम और बेटा,बेटी, पोता, पोती, नवासा, नवासी को ज़कात देना जाइज़ नहीं। बीवी अपने शौहर को और शौहर अपनी बीवी को ज़कात नहीं दे सकता।

उश्र का बयान

सवाल : उश्र किसे कहते हैं ?

जवाब : ज़मीन से ऐसी चीज़ पैदा हुई जिसकी ज़राअ़त (पैदावार) से मक़सूद ज़मीन से मुनाफ़ा हासिल करना हो तो उस पैदावार की ज़कात फ़र्ज़ है इस ज़कात का नाम

उश्र है यानि पैदावार का दसवाँ हिस्सा और कुछ सूरतों में बीसवाँ हिस्सा देना वाजिब है।

सवाल : किन चीज़ों की पैदावार में उश्र वाजिब है ?

जवाब : हर क़िस्म के ग़ल्ले, मेवे, सब्ज़ी वगैरह सब में उश्र वाजिब है थोडा पैदा हो या ज़्यादा।

सदक़-ए-फ़ित्र का बयान

सवाल : सदक़ए फ़ित्र किसे कहते हैं ?

जवाब : ईदुल फ़ित्र को जो सदक़ा निकाला जाता है उसको सदकए फित्र कहते हैं।

सवाल : सदक़ए फित्र देना किन पर वाजिब है ?

जवाब : हर मालिके निसाब पर अपनी और अपनी हर नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से एक-एक सदक़ए फ़ित्र देना वाजिब है।

सवाल : सदक़ए फ़ित्र की मिक़दार क्या है ?

जवाब : सदक़ए फ़ित्र की मिक़दार यह है कि 2,किलो 45,ग्राम गेंहूँ या उसका आटा या उसकी क़ीमत हर शख़्स की तरफ़ से अदा करे।

सवाल : सदक़ए फ़ित्र किन लोगों को देना जाइज़ है ?

जवाब : जिन लोगों को ज़कात देना जाइज़ है उनको सदक़ए फ़ित्र भी देना जाइज़ है और जिनको ज़कात देना जाइज़ नहीं उनको सदक़ए फ़ित्र भी देना जाइज़ नहीं।

ह़ज का बयान

सवाल : ह़ज की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब : **ह़दीसः** ह़ज़रत इब्ने मसऊद रदिअल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि ह़ज व उमरा मोहताजी और गुनाहों को ऐसे दूर करते है जैसे भट्टी लोहे और चाँदी और सोने के मैल को दूर करती है और हज्जे मबरूर (मक़बूल ह़ज) का सवाब जन्नत ही है। (तिर्मिज़ी)

ह़दीसः ह़ज़रत अबू हुरैरह रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाजी की मग़फ़िरत हो जाती है और हाजी जिसके लिये इस्तिग़फ़ार करे उसके लिये भी। (तबरानी)

सवाल : ह़ज किसे कहते हैं ?
जवाब : ह़ज कहते हैं एहराम बाँधकर नवीं ज़िल्हिज्जा को अरफ़ात में ठहरने और काबे शरीफ़ के तवाफ़ को और उसके लिये एक ख़ास वक्त मुकर्रर है कि जिस में यह काम किये जायें तो ह़ज है।
सवाल : ह़ज किस पर फ़र्ज़ है ?
जवाब : साहिबे इस्तिताअ़त (जो ह़ज करने पर क़ादिर हो) पर पूरी उम्र में एक बार ह़ज फ़र्ज़ है जो इसके फ़र्ज़ होने का इनकार करे काफ़िर है।
सवाल : ह़ज का तरीक़ा क्या है ?
जवाब : ह़ज का तरीक़ा यह है कि घर से रवाना होकर अगर सीधे मक्का मुकर्रमा जाना है तो हवाई अड्डे पर पहुँच कर पहले उमरा का एहराम बाँधें फिर हवाई जहाज़ में सवार होकर जिद्दा उतर कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुँचे सबसे पहले कअ़बे शरीफ़ का तवाफ़ करे और फिर सफ़ा व मरवा की सई करके सर मुँडा दे और एहराम खोल दे उसका उमरा मुकम्मल हो गया। फिर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में जहाँ क़ियाम है ईदुल अज़हा की 8 तारीख़ तक बग़ैर एहराम रहे और उन दिनों में नमाज़ों के बाद तवाफ़ करता रहे जब 8 या 7 तारीख़ आये तो सुबह को एहराम बाँध कर तवाफ़ करे और सफ़ा व मरवा की सई भी करे और इस सई में उस सई की भी नियत कर ले जो मिना से वापस आकर तवाफ़े ज़्यारत के साथ करनी होती है क्योंकि इस नियत की वजह से वह सई अब ज़रूरी नहीं रह जायेगी, उसके बाद मिना को रवाना हो जाये और वहाँ ज़ुहर से फ़ज्र तक क़ियाम करे, 9 तारीख़ की सुबह को सूरज बुलन्द होने के बाद अ़रफ़ात के मैदान के लिये रवाना हो वहाँ जा कर किसी ख़ेमे में क़ियाम करे, जब दोपहर क़रीब हो नहाये कि सुन्नते मुअक्कदा है और न हो सके तो सिर्फ वुज़ू करे दोपहर ढलते ही मस्जिदे नमरह पहुँचे सुन्नत पढ़ कर खुत्बा सुने और जमाअ़त के साथ ज़ुहर पढ़े इसके बाद ही फौरन अ़स्र की तकबीर होगी साथ ही जमाअ़त से अ़स्र पढ़े आज यहाँ ज़ुहर और अस्र के बीच सलाम व कलाम कैसा सुन्नतें भी न पढ़े और अस्र के बाद भी नफ्ल नहीं।
नोटः यह ज़ुहर व अ़स्र मिला कर पढ़ना जभी जाइज़ है जब नमाज़ या तो सुल्तान पढ़ाये या वह जो ह़ज में उसका नाइब होकर आता है, जिसने ज़ुहर अकेले या

अपनी ख़ास जमाअ़त से पढ़ी उसे वक़्त से पहले अ़स्र पढ़ना जाइज़ नहीं।
अब अ़स्र पढ़ते ही मूक़िफ़ मे जाये और सूरज डूबने तक ज़िक्र व दुरूद में व दुआ़ में मशग़ूल रहे, खूब गिड़गिड़ा कर और रो-रो कर दुआ़यें करे यहाँ तक कि मग़रिब का वक़्त हो जाये लेकिन यहाँ मग़रिब की नमाज़ नहीं पढ़ना है बल्कि मग़रिब के दस पाँच मिनट के बाद बग़ैर नमाज़ पढ़े मुज़दलेफ़ा के लिये रवाना हो जाये और मुज़दलेफ़ा पहँच कर इशा के वक़्त में पहले मग़रिब की और उसके फ़ौरन बाद इशा की नमाज़ पढ़े, फिर आराम करे और सुबह जल्द उठ कर फज्र की नमाज़ पढ़े उसके बाद यहाँ से सात कंकरियाँ चुन कर उनको धो ले और अपने साथ रख ले और मिना के लिये रवाना हो जाये, मिना पहुँच कर अगर हो सके तो जल्दी जाकर बड़े शैतान के सुतून (खम्बे) पर सात कंकरियाँ मारे और अगर आराम करने के बाद अ़स्र के वक़्त जाये जब भी कोइे हरज नहीं, उसके बाद मक्का शरीफ़ आकर तवाफ़े ज़्यारत कर ले चाहे तो पहले कुर्बानी कर ले उसके बाद बाल मुँडा कर एहराम उतार दे और फिर मक्का जाकर तवाफ़े ज़्यारत कर ले अब सई की ज़रूरत नहीं इसलिये कि ह़ज का एहराम बाँधने के बाद जो तवाफ़ किया था उसमें सई की नियत कर ली थी, उसके बाद 11,12 तारीख़ में मिना में क़ियाम करना और दोनों दिन तीनों शैतानों के कंकरियाँ मारना है, 12 तारीख़ को सूरज डूबने से पहले मक्का मुकर्ररमा के लिये रवाना हो जाये, अगर रात तक वहाँ ठहर गया तो फिर 13 तारीख़ को कंकरियाँ मार कर वापस आना होगा। इस तरह अब आपका ह़ज पूरा हो गया अब जब तक मक्का में रहना है हर दिन एक या दो उमरे करते रहें उन उमरों में कभी माँ बाप की तरफ़ से नियत कर लो कभी उस्ताद और भाई बहनों और दूसरे खानदान वालों की नियत कर लो आपको भी सवाब मिलेगा और जिनकी नियत करोगे उनको भी, उसके बाद जब मदीना मुनव्वरा जाने का प्रोग्राम बन जाये तो वहाँ के लिये रवाना हो जाओ, रास्तें में कसरत से दुरूदे पाक पढ़ते रहो और पूरी तवज्जोह सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़-ए-अनवर की ज़्यारत की तरफ़ लगा दो, आज वह सआ़दत मिलने जा रही है जहाँ की एक साअ़त (पल) पर हज़ारों साअ़तें कुर्बान, उन सरकारे आ़ज़म की बारगाह में हाज़िरी कि जिनकी सरकार और बारगाह मख़लूक़ में सबसे बुलन्द व बाला है, मदीना तय्यबा

पहुँच कर जितनी जल्द हो सके हुज़ूर के रौज़े पर हाज़िर हो जाओ निहायत अदब के साथ सर झुकाये रोते हुये और रोना न आये तो रोने जैसी सूरत बनाये हुये हाज़िरी दो, हुज़ूर के सामने खड़े होकर कम से कम सत्तर मरतबा दुरूद व सलाम पेश करो, फिर सय्यिदना सिद्दीके अकबर और सय्यिदना फ़ारूक़े आ़ज़म रदि अल्लाहु अन्हुमा के सामने आओ और उनको भी सलाम पेश करो। यहाँ 8,9 दिन से ज़्यादा रहने को नहीं मिलता लिहाज़ा पाबन्दी से मस्जिदे नबवी में 40 नमाज़ें पूरी कर लो कि जो हुज़ूर की मस्जिद में 40 नमाज़ें पढ़ लेता है दोज़ख़ और निफ़ाक़ से उसके लिये आज़ादी लिख दी जाती है। ख्याल रहे कि आजकल हरमैन में नज्दी वहाबी इमाम हैं लिहाज़ा हरगिज़ उनके पीछे नमाज़ न पढ़ें बल्कि अपने वक़्तों पर अपनी जमाअ़त करें या फिर अलाहिदा अपनी नमाज़ पढ़ें।

सवाल : हज में कितने फ़र्ज़ हैं और कौन कौन से ?

नोटः यह तरीक़ा हज-ए-तमत्तोअ़ का है।

जवाब : हज मे सात फ़र्ज़ हैं.

(1) **एहराम** ।

(2) **वुक़ूफ़े अरफ़ा** यानि नवीं ज़िल्हिज्जा को आफ़ताब ढलने से दसवीं की सुबहे सादिक़ तक किसी वक़्त अरफ़ात में ठहरना।

(3) **तवाफ़े ज़्यारत** का अक्सर हिस्सा यानि चार फेरे।

(4) **नियत**।

(5) **तरतीब** यानि पहले एहराम बाँधना फिर वुक़ूफ़ फिर तवाफ़।

(6) **वक़्त** यानि हर फ़र्ज़ का अपने वक़्त पर होना।

(7) **मकान** यानि वुक़ूफ़ मैदाने अरफ़ात में होना सिवा बत्ने उरना के और तवाफ़ का मकान मस्जिदे हराम शरीफ़ है।

सवाल : हज के कितने वाजिब है और कौन-कौन से ?

जवाब : हज के वाजिबात बहुत है उनमें से कुछ यह हैं

(1) सफ़ा व मरवा के दरमियान दौड़ना इसको सई कहते हैं।

(2) सई को सफ़ा से शुरू करना।

(3) वुक़ूफ़े अरफा में मग़रिब के कुछ बाद तक रहना।

(4) मुज़दलेफ़ा में ठहरना।

(5) मग़रिब और इशा की नमाज़ें इशा के वक़्त में मुज़दलेफ़ा आकर पढ़ना।

(6) जमरों पर कंकरियाँ मारना।

(7) क़िरान व तमत्तोअ़ वाले को कुर्बानी करना।

(8) कुर्बानी का हरम व अय्यामे नहर में होना।

(9) तवाफ़े सद्र यानि रूखसती के वक़्त तवाफ़ करना।

सवाल : अगर कोई वाजिब छूट जाये तो क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर कोई वाजिब छूट जाये तो उससे दम (कुर्बानी) लाज़िम आती है चाहे वह जान बुझ कर छोड़ा हो या भूल कर।

सवाल : हज की कितनी सुन्नतें हैं ?

जवाब : हज की सुन्नतें बहुत हैं उनमें से कुछ यह हैं.

(1) तवाफ़े कुदूम यानि मीक़ात के बाहर से आने वाला मक्का मुअ़ज़्ज़मा में हाज़िर हो कर सब में पहले जो तवाफ़ करे उसे तवाफ़े कुदूम कहते हैं तवाफ़े कुदूम मुफ़रिद और क़ारिन के लिये सुन्नत है मुतमत्तेअ़ के लिये नहीं।

(2) तवाफ़ का हजरे असवद से शुरू करना।

(3) तवाफ़े कुदूम या तवाफ़े फ़र्ज़ में रमल करना यानि अकड कर चलना।

(4) आठवीं की फ़ज्र के बाद मक्का से रवाना होना कि मिना में पाँच नमाज़ें पढ़ ली जायें।

(5) नौ तारीख़ की रात मिना में गुज़ारना।

(6) आफ़ताब निकलने के बाद मिना से अरफ़ात को रवाना होना।

(7) वुक़ूफ़े अरफ़ा के लिये ग़ुस्ल करना।

(8) अरफ़ात से वापसी में मुज़दल्फ़ा में रात को ठहरना।

(9) आफ़ताब लिनकलने से पहले यहाँ से मिना को चले जाना।

(10) दस और ग्यारह के बाद जो दोनों रातें हैं उनको मिना में गुज़ारना।

सवाल : क़ारिन, मुफ़रिद और मुतमत्ते किसे कहते हैं ?

जवाब : **क़ारिन** वह शख़्स है जिसने हज और उमरा दोनों का एहराम बाँधा हो और

मुफ़रिद वह शख़्स है जिसने सिर्फ हज का एहराम बाँधा हो और **मुतमत्तेअ़** वह शख़्स है जो हज के दिनो में उमरा करे और उसी साल हज का एहराम बाँधें।

कुर्बानी का बयान

सवाल : कुर्बानी किसे कहते हैं ?

जवाब : ख़ास जानवर को ख़ास दिन में अल्लाह के लिये सवाब की नियत से ज़बह करने को कुर्बानी कहते हैं।

सवाल : कुर्बानी करना किस पर वाजिब है ?

जवाब : कुर्बानी करना हर मालिके निसाब पर वाजिब है।

सवाल : मालिके निसाब पर ज़िन्दगी में सिर्फ एक बार कुर्बानी करना वाजिब है या हर साल ?

जवाब : अगर हर साल मालिके निसाब है तो हर साल अपने नाम से कुर्बानी करना वाजिब है और अगर दूसरे की तरफ से भी करना चाहता है तो उसके लिये दूसरी कुर्बानी का इन्तिज़ाम करे।

सवाल : कुर्बानी करने का तरीक़ा क्या है ?

जवाब : कुर्बानी करने का तरीक़ा यह है कि जानवर को बायीं पहलू पर इस तरह लिटायें कि उसका मूँह किब्ले की तरफ़ हो और अपना दाहिना पाँव उसके पहलू पर रखकर तेज़ छुरी लेकर यह दुआ़ पढ़ें

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفاً وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ. اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَ مَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ.لَا شَرِیْکَ لَهٗ وَبِذٰلِکَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ. اَللّٰهُمَّ لَکَ وَمِنْکَ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ.

दुआ़ पढ़ने के बाद ज़बह करे फिर यह दुआ़ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّیْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِیْلِکَ اِبْرَاهِیْمَ عَلَیْهِ السَّلَامُ وَحَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ

अगर दूसरे की तरफ़ से कुर्बानी करे तो مِنِّیْ के बजाये مِنْ कहकर उसका नाम ले।

सवाल : साहिबे निसाब अगर किसी वजह से कुर्बानी न कर सका और कुर्बानी के दिन गुज़र गये तो उसके लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : एक बकरी की कीमत उस पर सदक़ा करना वाजिब है।

अ़क़ीक़े का बयान

सवाल : अ़क़ीक़ह किसे कहते हैं ?

जवाब : बच्चा पैदा होने के शुक्रिये में जो जानवर ज़बह किया जाता है उसको अ़क़ीक़ह कहते हैं।

सवाल : अ़क़ीक़ह कब करना चाहिये ?

जवाब : अ़क़ीक़े के लिये सातवाँ दिन बेहतर है अगर सातवें दिन न कर सकें तो जब मयस्सर हो करें सुन्नत अदा हो जायेगी।

सवाल : लड़का और लड़की के अ़क़ीक़े में कैसा जानवर मुनासिब है ?

जवाब : लड़के के अ़क़ीक़े में दो बकरे और लड़की के अ़क़ीक़े में एक बकरी ज़बह करना मुनासिब है और अगर लड़के के अ़क़ीक़े में बकरियाँ और लड़की के अ़क़ीक़े में बकरा किया जब भी कोई हरज नहीं। और अगर इस्तिताअ़त न हो तो लड़के के अ़क़ीक़े में एक बकरा भी ज़बह कर सकते हैं। अगर बड़ा जानवर ज़बह किया जाये तो लड़के के लिये सात हिस्सों में से दो हिस्से और लड़की के लिये एक हिस्सा काफ़ी है।

इस्लामी अख़लाक़-व-आदाब

खाने का बयान

सवाल : खाना खाने के आदाब बयान कीजिये ?

जवाब : **हदीसः** हज़रत हुज़ैफ़ा रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाये वह खाना शैतान के लिये हलाल हो जाता है। (इब्ने माजा)

हदीसः हज़रत अबू हुरैरह रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दाहिने हाथ से खाये और दाहिने हाथ से पिये और दाहिने हाथ से ले और दाहिने हाथ से दे क्योंकि शैतान बायें हाथ से खाता है और बायें हाथ से पीता है और बायें से लेता है और बायें से देता है।

खाना खाने से पहले और बाद में दोनों हाथ गट्टों तक धोयें सिर्फ एक हाथ या फ़क़त उंगलियाँ न धोये कि सुन्नत अदा न होगी, खाने से पहले हाथ धोकर पोंछना मना है, बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाना शुरू करें अगर शरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जायें तो जब याद आये यह दुआ पढ़ेंः بِسۡمِ اللّٰهِ فِیۡ اَوَّلِهٖ وَاٰخِرِهٖ रोटी पर कोई चीज़ न रखें और हाथ को रोटी से न पोंछें, नंगे सर न खायें बल्कि टोपी लगा लें, खाना दाहिने हाथ से खायें बायें हाथ से खाना शैतान का काम है, खाते वक़्त बायाँ पाँव बिछा दें और दाहिना खड़ा रखें खाते वक़्त बातें करता रहे बिल्कुल चुप रहना मजूसियों का तरीका है मगर बेहूदा बातें न कहे बल्कि अच्छी बातें करे खाने के बाद उंगलियाँ चाट ले और बरतन को भी उंगलियों से चाट ले, खाने की शुरूआत नमक से करी जाये और खत्म भी इसी पर करें कि इससे बहुत सी बीमारियाँ खत्म होती हैं।

पानी पीने का बयान

सवाल : पानी पीने के आदाब बयान कीजिये ?

जवाब : **हदीसः** हज़रत इब्ने अब्बास रदि अल्लाहु अन्हुमा से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक साँस में पानी न पियो जैसे ऊँट

पीता है बल्कि दो और तीन मरतबा में पियो और जब पियो तो बिस्मिल्लाह कह लो और जब बरतन को मूँह से हटाओ तो अल्लाह की हम्द कहो। (तिर्मिज़ी)

पानी बिस्मिल्लाह पढ़ कर दाहिने हाथ से पीना चाहिये बायें हाथ से पीना शैतान का काम है और तीन साँसों में पीना चाहिये पहली और दूसरी मरतबा में एक एक घूँट पियें और तीसरी साँस में जितना चाहें पी डालें, खड़े हो कर हरगिज़ न पियें और जब पी चुकें तो अल्हम्दु लिल्लाह कहें पीने के बाद गिलास वगैरह का बचा हुआ पानी फेंकना इसराफ व गुनाह है।

लिबास का बयान

सवाल : किस तरह का लिबास पहनना चाहिये और किस तरह का नहीं ?

जवाब : इतना लिबास कि जिससे सत्रे औरत हो जाये और गर्मी व सर्दी की तकलीफ़ से बचा जा सके फ़र्ज़ है और इससे ज़्यादा जिससे ज़ीनत मक़सूद हो और अल्लाह की नेमत का इज़हार किया जाये मुसतहब है, ख़ास मौक़े पर जैसे जुमा या ईदैन के मौक़े पर उम्दा कपड़े पहनना मुबाह हैं, औरतें बारीक और चुस्त लिबास हरगिज़ न पहनें जिससे बदन के आज़ा ज़ाहिर हों कि औरतों को ऐसा कपढ़ा पहनना हराम है और मर्द भी पाजामा या तहबंद इतना हल्का न पहनें कि जिससे बदन की रंगत झलके और सत्र न हो कि मर्दों को भी ऐसा पाजामा व तहबंद पहनना हराम है।

अय्यामे मुहर्रम (मुहर्रम की एक तारीख़ से बारहवीं तारीख़ तक) में तीन रंग के कपड़े न पहने जायें

(1) **काला** क्योंकि यह राफ़ज़ियों का तरीका है।

(2) **हरा** क्योंकि यह ताज़ियादारों का तरीका है।

(3) **लाल** क्योकि यह खारजियों का तरीका है।

सवाल : क्या मर्द को रेशम के कपड़े पहनना जाइज़ है ?

जवाब : मर्द को रेशम के कपढ़े पहनना जाइज़ नहीं इसी तरह नाबालिग़ लड़कों को भी रेशम के कपड़े पहनाना हराम हैं और गुनाह पहनाने वाले पर है।

सवाल : कपड़ा पहनने का इस्लामी तरीक़ा क्या है ?

जवाब : कपड़ा पहनने का इस्लामी तरीका यह है कि जब कपड़ा पहने तो दाहिने से शुरू करे यानि पहली दाहिनी आस्तीन या दाहिने पाइचें मे डाले फिर बायीं में।

ज़ेवर का बयान

सवाल : ज़ेवर पहनना कैसा है ?

जवाब : मर्द को ज़ेवर पहनना मुतलक़न हराम है सिर्फ चाँदी की एक अंगूठी जाइज़ है जो वज़न में साढ़े चार माशे से कम हो और कई अंगूठी या एक अंगूठी कई नग वाली पहनना नाजाइज़ है और औरतें सोना चाँदी की हर क़िस्म की अंगूठी और छल्ले पहन सकती हैं लेकिन दूसरी धातों की अंगूठी जैसे ताँबा, पीतल, लोहा, जस्ता वगैरह इन धातों की अंगूठियाँ मर्द व औरत दोनों के लिये नाजाइज़ है फ़र्क इतना है कि औरत सोना पहन सकती है मर्द नहीं पहन सकता।

सोने का बयान

सवाल : सोने का इस्लामी तरीका क्या है ?

जवाब : सोने का इस्लामी तरीका यह है कि बा वुज़ू सोये और कुछ देर दाहिनी करवट पर दाहिने हाथ को रूख़सार (गाल) के नीचे रख कर क़िब्ले की तरफ़ मूँह करके सोये फिर उसके बाद बायीं करवट पर और सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहाँ तन्हा सोना होगा सिवा अपने आमाल के वहाँ कोई साथ न होगा, सोते वक़्त अल्लाह की याद में मशगूल हो, कलमा दुरूदे पाक वगैरह पढ़ कर सो जाये कि इन्सान जिस हालत पर सोता है उसी हालत पर उठता है और जिस हालत पर मरता है क़ियामत के दिन उसी हालत पर उठेगा, सुबह नमाज़ के वक़्त उठ जाये और उठते ही ख़ुदा को याद करे।

सवाल : किन वक़्तों में सोना मकरूह है ?

जवाब : दिन के इब्तिदाई (शुरूआती) हिस्से में सोना या मग़रिब और इशा के दर्मियान में सोना मकरूह है।

अख़लाक़ का बयान

सवाल : अच्छे अख़लाक़ की फ़ज़ीलत बयान कीजिये ?

जवाब : **ह़दीसः** रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अच्छे अख़लाक़ से बेहतर इन्सान को कोई चीज़ नहीं दी गई. (बैहक़ी)

ह़दीसः हुजूर सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ईमान में ज़्यादा कामिल वह

हैं जिनके अख़लाक़ अच्छे हों. (बुख़ारी)

हदीसः रसूले अकरम का फ़रमान है कि मैं इस लिये भेजा गया कि अच्छे अख़लाक़ की तकमील कर दूं . (इमाम मालिक)

हदीसः हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो नर्मी से महरूम हुआ वह खैर से महरूम हुआ. (मुस्लिम)

हदीसः सरकारे दोआलम सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला मैहरबान है मैहरबानी को दोस्त रखता है और मैहरबानी पर वह देता है कि सख्ती पर नहीं देता. (मस्लिम)

हदीसः हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हया ईमान से है और ईमान जन्नत में है और बेहूदा गोई (बुरी बातें कहना) जफ़ा से है और जफ़ा जहन्नम में है. (तिर्मिज़ी)

सीरत-ए-मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

सवालः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक पैदाइश कब हुई ?

जवाब : हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक पैदाइश वाकिअए फ़ील के 55 दिन बाद 12, रबीउल अव्वल मुताबिक़ 20, अप्रैल 571 ईसवी को मक्का शरीफ़ में सुबह सादिक़ के वक़्त हुई आप साफ़ सुथरे ख़तना किये हुये पैदा हुये आपके जिसमे मुबारक से तेज़ खुशबू आ रही थी जिस से सारा घर खुशबू से महक गया आपने पैदा होते ही अल्लाह तआ़ला की बारगाह में सजदा किया और अपनी उम्मत के लिये दुआ़ फ़रमायी।

सवाल : आपकी विलादत के वक़्त क्या क्या अजीब वाक़िआत हुये ?

जवाब : जव आप पैदा हुये तो तो मदाइन में किसरा के महल में ज़लज़ला आ गया और उसके 14 कंगूरे गिर गये, मुल्के ईरान के आतिश कदे बुझ गये, बुहीरए सावा जिसके किनारे बुतों की पूजा की जाती थी एक दम खुश्क हो गया,बुत मूँह के बल गिर पड़े. यह तमाम वाक़िआ़त इस बात का ऐलान थे कि दुनिया में एक अ़ज़ीम इन्क़िलाब (क्रान्ति) आने वाला है।

सवाल : आपने कितनी औरतों का दूध पिया ?

जवाब : आपने तीन औरतों का दूध पिया, सात दिन अपनी वालिदा का फिर कुछ दिनों ह़ज़रत सुवैबा का दूध पिया उसके बाद यह ख़िदमत ह़ज़रत हलीमा के हिस्से में आयी उन्होंने आपको दो बरस की उम्र तक दूध पिलाया।

सवाल : आपके वालिदैन (माँ बाप) का नाम क्या है ?

जवाब : आपके वालिद का नाम ह़ज़रत अब्दुल्लाह और माँ का नाम ह़ज़रत आमिना है।

सवाल : आपके दादा और परदादा का नाम क्या है ?

जवाब : आपके दादा का नाम ह़ज़रत अब्दुल मुत्तलिब और परदादा का नाम ह़ज़रत हाशिम है।

सवाल : आपके वालिदैन की वफ़ात कब हुई ?

जवाब : आपके वालिद का इन्तिक़ाल आपकी पैदाइश से कुछ महीने पहले ही हो गया था और जब आपकी उम्र शरीफ़ 6 साल की हुई तो आपकी वालिदा भी इन्तिक़ाल

फ़रमा गईं, उनके बाद आपकी परवरिश आपके दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने फ़रमायी।
सवाल : आपने सबसे पहला निकाह किन से और किस उम्र में फ़रमाया ?
जवाब : आपने सबसे पहला निकाह हज़रत ख़दीजा रदि अ़ल्लहु अन्हा से 25, साल की उम्र शरीफ़ में फ़रमाया।
सवाल : आपने अपनी नबूव्वत का ऐलान कब फ़रमाया ?
जवाब : जब आपकी उम्र शरीफ़ 40, साल की हो गई तब आपने अपनी नबुव्वत का ऐलान फ़रमाया और दीन-ए-इस्लाम की तबलीग़ शुरू फ़रमादी।
सवाल : आप पर सबसे पहले कौन लोग ईमान लाये ?
जवाब : आप पर सबसे पहले
जवानों में हज़रत अबू बक्र सिददीक़ रदि अल्लाहु अन्हू,
बच्चों में हज़रत अली रदि अल्लाहु अन्हू,
ग़ुलामों में हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रदि अल्लाहु अन्हू ईमान लाये और
औरतों में हज़रत ख़दीजा रदि अल्लाहु अन्हा ईमान लायीं।
सवाल : आपकी कितनी औलादें हुईं ?
जवाब : आपकी 7 औलादें हुईं, 3, लड़के (1) हज़रत क़ासिम (2) हज़रत अब्दुल्लाह (3) हज़रत इब्राहीम रदि अल्लाहु अन्हुम और 4 लड़कियाँ (1) हज़रत ज़ैनब (2) हज़रत रुक़य्या (3) हज़रत उम्मे कुल्सुम (4) हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रदि अल्लाहु अन्हुन्ना।
सवाल : आपने आखिरी हज कब फ़रमाया ?
जवाब : आपने आखिरी हज सन 10, हिजरी में फ़रमाया इसमें आपके साथ एक लाख से ज़्यादा सहाबा-ए-किराम शरीक थे, इस हज को तारीखे इस्लाम में ‘‘हज्जतुल वदा’’ के नाम से जाना जाता है।
सवाल : आपका विसाल शरीफ़ कब हुआ ?
जवाब : आपका विसाल शरीफ़ 12, रबीउल अव्वल 11, हिजरी को पीर के दिन मदीना मुनव्वरा में हुआ, आपकी उम्र शरीफ़ 63 साल की हुई, 53 साल मक्कतुल मुकर्रमा में रहे और 10 साल मदीनतुल मुनव्वरा में रहे।

सवाल : आपके विसाल शरीफ़ का मतलब क्या है ?
जवाब : आपके विसाल शरीफ़ का मतलब यह है कि आप हमारी ज़ाहिरी आँखों से पोशीदा हो गये वरना आप आज भी उसी तरह ज़िन्दा है जैसे दुनिया में थे, नबियों को अल्लाह तआ़ला का वादा पूरा होने के लिये बस थोड़ी देर के लिये मौत आती है उसके बाद अल्लाह तआ़ला फिर उन्हें वैसी ही ज़िन्दगी अता फरमा देता है जैसे पहले थी।

नात-ए-पाक

वह यूँ तशरीफ़ लाये हम गुनहगारों के झुरमुट में
मसीह़ा जैसे आ जाता है बीमारों के झुरमुट में

मदद फ़रमाइये आ़क़ा परेशाँ हाल उम्मत की
कि शोरे अलमदद बरपा है बेचारों के झूरमुट में

लरज़ जाती हैं हर मौजे बला से आज वह कशती
रहा करतीं थीं जो ख़न्दाँ कभी धारों के झूरमुट में

तलाशे जज़्बए ईमाँ अ़बस है कीना कारों में
वफ़ा की जुस्तुजू और इन जफ़ाकारों के झूरमुट में

हुसैन इब्ने अ़ली की आज भी हम को ज़रूरत है
घिरा है आज भी इस्लाम खूख्वारों के झुरमुट में

उनहीं का अ़क्से रूख़ जलवा फ़गन है वरना ऐ तहसीन
चमक ऐसी कहाँ से आ गई तारों के झूरमुट मे

अज़ हुजूर सदरूल उलमा अलैहिर्रहमा

तारीख़-ए-इस्लाम

सवाल : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक वतन कहाँ है ?

जवाब : हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के पश्चिम में इराक़ से मिला हुआ एक मुल्क अ़रब है इस मुल्क में दो बड़े शहर मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ हैं इन दोनों मुक़ददस शहरों से हमारे आक़ा का गहरा तअ़ल्लुक़ है आपकी विलादत मक्का शरीफ़ में हुई और यहाँ पर आपने 53 साल गुज़ारे फिर आपने मदीना शरीफ़ को हिजरत फ़रमायी और वहाँ 10 साल क़ियाम फ़रमाया।

सवाल : सबसे पहली जगं कौन सी और कब हुई ?

जवाब : सबसे पहली जंग जंगे बद्र सन 2, हिजरी में हुई, इसमें मुसलमानों के लशकर की तादाद 313 और कुफ़्फ़ार की तादाद 1000 से भी ज़्यादा थी, 17, रम्ज़ानुल मुबारक सन 2 हिजरी में जंग शुरू हुई और उसी दिन मुसलमान इस तरह कामयाब हुये कि मक्के के बड़े बड़े सरदार मारे गये अबु जहल, उतबा, शैबा, और उमय्या इब्ने ख़लफ़ जैसे 70 काफ़िर मारे गये और 70 ही गिरफ्तार हुये लेकिन मुसलमानों ने उन क़ैदियों के साथ अच्छा सुलूक किया।

सवाल : जंगे उहुद का वाक़िआ़ बताइये ?

जवाब : उहुद एक पहाड़ का नाम है जो मदीना मुनव्वरा से तक़रीबन 3,मील दूर है, चूँकि यह अ़ज़ीम वाक़िआ़ इसी पहाड़ के दामन में पेश आया इस लिये यह लड़ाई ''ग़ज़्व-ए-उहुद'' के नाम से मशहूर है। जंगे बद्र के बाद भी कुफ्फार चैन से नहीं बैठे और एक साल के बाद तीन हज़ार का लशकर मदीने पर चढ़ाई करने के लिये आ गया, हुज़ूर ने सहाबा-ए-किराम को जमा फ़रमाकर सारे हालात सुनाये और फिर एक हज़ार का लशकर लेकर मैदाने उहुद में तशरीफ़ ले आये, काफ़िरों के मुक़ाबले यहाँ भी मुसलमानों की तादाद काफ़ी कम थी, लेकिन पहले हमले ही में कुफ्फ़ार भाग पड़े और मुसलमानों ने माले ग़नीमत जमा करना शुरू कर दिया। हुज़ूर ने पचास तीर अन्दाज़ों का एक दस्ता फ़ौज लशकर की हिफ़ाज़त के लिये एक टीले पर मुक़र्रर की थी और उनको ताकीद की थी क तुम यहाँ से उस वक़्त तक न हटना जब तक कि मैं तुम्हारे पास किसी को न भेजूँ, उनसे यह ग़लती हुई कि फ़तह

देख कर वह टीले से उतर आये, मौका पाकर काफ़िरों ने पीछे जाकर हमला कर दिया और जंग का पाँसा पलट गया, इसके नतीजे में सत्तर सहाबा शहीद हो गये और हुज़ूर के दन्दाने मुबारक भी इसी जंग में शहीद हुये, हुज़ूर के महबूब चचा हज़रते हमज़ा भी शहीद हुये आखिर मुसलमानों ने पहाड़ी पर चढ़कर नया मोर्चा क़ाइम कर लिया और इस तरह हमला किया कि काफ़िरों के पाँव उखड़ गये।

सवाल : जंगे ख़न्दक़ का वाक़िआ बयान कीजिये ?

जवाब : तमाम क़बाइले अ़रब के कुफ्फ़ार ने मिल जुल कर एक बड़ा लशकर तय्यार किया, जब अ़रब के तमाम काफ़िरों के गठजोड़ और खौफ़नाक हमले की खबरें मदीना पहूँची तो हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को जमा फ़रमाकर मशवरा फरमाया, हज़रत सलमान फ़ारसी रदिअल्लाहु अन्हु ने मदीने के गिर्द खन्दक़ खोद कर लशकर को मदीने में महफ़ूज़ करके जंग करने का मशवरा दिया जिसको सबने मन्जूर कर लिया, 15 दिन के अन्दर ख़न्दक़ खोदी गई, जब कुफ़्फ़ार पहूँचे तो मुसलमानों की यह कार्यवाही देख कर उनके हौसले पस्त हो गये लेकिन फिर भी काफ़िरों ने मुसलमानों का घिराव जारी रखा, एक महीने तक मुसलमानों पर पत्थर और तीर बरसाते रहे और मुसलमान बहुत सब्र के साथ काफ़िरों के हमले बर्दाश्त करते रहे, आखिरकार कुफ़्फार हिम्मत हार गये और उनमें आपस में फूट पड़ गई, फिर अचानक कुफ़्फ़ार के लशकर पर अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब की ऐसी मार पड़ी कि अचानक ऐसी तेज़ आँधी आई जिससे देगें चूल्हों पर से उलट गईं, ख़ेमे उखड़ कर गिरने लगे इससे काफ़िरों पर ऐसी दहशत सवार हुई कि मैदाने जंग से भाग गये और इस तरह मुसलमानों को फ़तह हासिल हुई।

सवाल : सुलह हुदैबिया का वाक़िआ बयान कीजिये ?

जवाब : ज़ुलकायदा सन 6, हिजरी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने 1400 सहाबा-ए-किराम के साथ उमरे का एहराम बाँध कर मक्का के लिये रवाना हुये लेकिन मक्के के काफ़िरों ने आपका रास्ता रोक लिया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको बहुत इत्मिनान दिलाया कि हम जंग के इरादे से नहीं आये है बल्कि हम सिर्फ़ उमरा करने आये हैं उमरा करके वापस चले जायेगें मगर कुफ़्फ़ार नहीं माने तो एक सुलहनामा लिखा गया जिसकी शर्तें यह थीं कि

- मुसलमान इस साल बग़ैर उमरा किये वापस चले जायें।
- अगले साल उमरा के लिये आयें और सिर्फ़ तीन दिन मक्का में ठहर कर वापस चले जायें।
- तलवार के सिवा कोई दूसरा हथियार लेकर न आयें, तलवार भी नियाम के अन्दर रखकर थैले वग़ैरह में बन्द हो।
- मक्का में जो मुसलमान पहले से मुक़ीम हैं उनमें से किसी को अपने साथ न ले जायें और मुसलमानों में से अगर कोई मक्का में रहना चाहे तो उसे न रोकें।
- काफ़िरों या मुसलमानों में से कोई शख़्स अगर मदीना चला जाये तो वापस कर दिया जाये लेकिन अगर कोई मुसलमान मदीने से मक्का में चला जाये तो वह वापस नहीं किया जायेगा।
- अरब के क़बीलों को यह इख़्तियार होगा कि वह फ़रीक़ैन में से जिसके साथ चाहें दोस्ती का मुआ़हिदा करलें।

यह शर्तें ज़ाहिर में मुसलमानों के ख़िलाफ़ थीं मगर क़ुरआ़ने करीम ने इसको फ़तहे मुबीन (रौशन फ़तह) फ़रमाया और हक़ीकतन यह रौशन फ़तह साबित हुई। इसी सुलह को तारीख़े इस्लाम में सुलह हुदैबिया के नाम से जाना जाता है।

सवाल : जंगे खैबर का वाक़िआ़ बताइये ?

जवाब : जंगे खैबर सन 7 हिजरी में यहूदियों से लड़ी गई, खैबर के यहूदी अ़रब के सबसे बड़े मालदार होने के साथ बहुत ही जंगबाज़ और तलवार के धनी थे इन्होंने एक बड़ी ताक़तवर फ़ौज तय्यार की और मदीना पर हमला करके मुसलमानों को तहस नहस करने का प्लान बनाया। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह खबर मिली कि यहूदी मदीने पर हमला करने वाले हैं तो इनकी इस चढ़ाई को रोकने के लिये 1600 सहाबा-ए-किराम का लशकर साथ लेकर आप खैबर रवाना हुये, आखिरकार हज़रत अ़ली रदि अल्लाहु अन्हु के हाथ पर ख़ैबर का क़िला फ़तह हुआ।

सवाल : फ़तह-ए-मक्का का वाक़िआ़ बयान कीजिये ?

जवाब : फ़तह-ए-मक्का का अ़ज़ीम वाक़िआ़ सन 8 हिजरी मे हुआ इसकी वजह यह थी कि जो सुलह नामा लिखा गया था वह दस साल के लिये था मगर कुफ़्फ़ारे कुरैश

इस सुलहनामे की शराइत की पाबन्दी न कर सके और दर्मियान में ही मुआ़हिदा तोड़ दिया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब यह ख़बर मिली कि मक्के के काफ़िरों ने मुआ़हिदा तोड़ दिया है तो आपने उसी वक़्त सहाबा-ए-किराम को मक्के पर चढ़ाई का हुक्म दिया, 10, रमज़ान सन 8 हिजरी को 10000 का इस्लामी लशकर लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रवाना हुये, मक्के के करीब पहुँच कर आपने क़ियाम फ़रमाया, इसी दर्मियान ह़ज़रत उमर रदि अल्लाहु अन्हु ने एक मक़ाम पर अबू सुफ़यान को गिरफ्तार कर लिया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में ले आये हुज़ूर ने इनको छोड़ दिया, अबू सुफ़यान हुज़ूर का यह करीमाना अख़लाक़ देख कर हैरान रह गये और उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। ताजदारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का की सरज़मीन में क़दम रखते ही जो पहला फ़रमान जारी फ़रमाया वह यह ऐलान था कि जिस के लफ़्ज़-लफ़्ज़ में रहमतों के दरिया मौंजें मार रहे थे, आप ने फ़रमाया कि

- जो शख़्स हथियार डाल देगा उसके लिये अमान है।
- जो शख़्स अपना दरवाज़ा बन्द कर लेगा उसके लिये अमान है।
- जो काबे में दाखिल हो जायेगा उसके लिये अमान है।
- जो अबू सफ़यान के घर में दाख़िल हो जाये उसके लिये अमान है।

इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ातिहाना अन्दाज़ में दाखिल हुये और मक्के के काफ़िरों से मुख़तिब होकर फ़रमाया कि 'तुम्हें कुछ मालूम है कि आज तुम्हारे साथ कैसा सुलूक होगा' यह सुनकर कुफ़्फ़ार काँप उठे लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि '' आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं जाओ तुम सब आज़ाद हो'' यह सुनकर मक्के वाले शर्म व नदामत से झुक गये और ज़्यादातर लोगों ने उसी वक़्त इस्लाम क़बूल कर लिया। ख़ाना-ए-काबा में जो बुत रखे हुये थे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से उन सबको तोड़ दिया गया और बुतों से काबे को पाक कर दिया गया, इसके बाद मक्के के आसपास जो बुत रखे हुये थे उन सबको भी तोड़ दिया गया।

ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का बयान

सवाल : सबसे पहले ख़लीफ़ा कौन हुये ?

जवाब : सबसे पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदि अल्लल्लहु अन्हु हुये।

सवाल : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदि अल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त कितने साल रही?

जवाब : आपकी ख़िलाफ़त सवा दो साल रही।

सवाल : दूसरे ख़लीफ़ा कौन हुये ?

जवाब : दुसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आ़ज़म रदि अल्लाहु अन्हु हुये।

सवाल : हज़रत उमर फ़ारूक़े आ़ज़म रदि अल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त कितने साल रही ?

जवाब : आपकी खिलाफ़त साढ़े दस साल रही।

सवाल : तीसरे ख़लीफ़ा कौन हुये ?

जवाब : तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान ग़नी रदि अल्लहु अन्हु हुये।

सवाल : हज़रत उस्मान ग़नी रदि अल्लहु अन्ह की ख़िलाफ़त कितने साल रही ?

जवाब : आपकी ख़िलाफ़त बारह साल रही।

सवाल : चौथे ख़लीफ़ा कौन हुये ?

जवाब : चौथे ख़लीफ़ा हज़रत मौला अ़ली रदि अल्लाहु अन्हु हुये।

सवाल : आपकी ख़िलाफ़त कितने साल रही ?

जवाब : आपकी ख़िलाफ़त तक़रीबन पाँच साल रही।

इल्म-ए-दीन हासिल करो

ह़दीसः इल्मे दीन हासिल करना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है.

आधी रोटी खाइये - बच्चों को पढ़ाइये

मुतफ़र्रिक़ात

सवाल : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुहम्मद नाम किसने रखा ?
जवाब : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुहम्मद नाम आपके दादा ह़ज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने रखा।
सवाल : सबसे पहले किस चीज़ को पैदा किया गया ?
जवाब : सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर को पैदा किया गया।
सवाल : हुज़ूर सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम के नाना, नानी का नाम क्या है ?
जवाब : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाना का नाम वहब और नानी का नाम बर्रह है।
सवाल : सहाबी किसे कहते हैं ?
जवाब : सहाबी उन्हें कहते हैं जिन्होंने इस्लाम की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात की हो और इस्लाम ही की हालत में उनका इन्तिक़ाल हुआ हो।
सवाल : दुनिया के तमाम पानियों में सबसे अफ़ज़ल कौन सा पानी है ?
जवाब : वह पानी जो हुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक उंगलियों से निकला वह पानी दुनिया के तमाम पानियों से अफ़ज़ल है।
सवाल : वह कौन सा पानी है जो क़ियामत के दिन नेकियों के पल्ले में तोला जायेगा?
जवाब : वुज़ू का पानी।
सवाल : क्या ज़मीन मुतहर्रिक है यानि घूमती है ?
जवाब : नहीं, ज़मीन व आसमान दोनों साकिन (ठहरे) है इन में से कोई नहीं घूमता।
सवाल : हमारे नबी का वह कौन सा मोअ़जिज़ा है जो दाइमी और अबदी है, फ़ना नहीं होगा ?
जवाब : वह मोअ़जिज़ा क़ुरआने मुक़द्दस है।
सवाल : फ़िरिशतों के क़िबले का नाम क्या है ?
जवाब : फ़िरिशतों के क़िबले का नाम बैतुल मामूर है।
सवाल : किन पानियों को खड़े होकर पीने का हुक्म है ?

जवाब : ज़मज़म शरीफ़ और वुज़ू के बचे हुये पानी को ख़ड़े होकर पीने का हुक्म है।
सवाल : कुरआन शरीफ़ में कितनी सूरतें हैं ?
जवाब : कुरआन शरीफ़ में 114 सूरतें हैं।
सवाल : कुरआन शरीफ़ में कितनी सूरतें मक्की और कितनी मदनी हैं
जवाब : 83 सुरतें मक्की और 31 सूरतें मदनी हैं।
सवाल : वह कौन सी सूरतें हैं जिनके बारे में कहा गया है कि वह अ़र्श के ख़ज़ाने से नाज़िल हुई हैं ?
जवाब : सुरह फ़ातिहा, आयतुल कुर्सी, सूरह बक़रह का आख़िर, सूरह कौसर
सवाल : कुरआने करीम के वह दो हिस्से कौन से हैं जिन्हें नूर कहा गया है और आप से पहले किसी नबी पर नाज़िल नहीं हुये ?
जवाब : सूरह फ़ातिहा और सूरह बक़रह की आख़िरी आयतें।
सवाल : कुरआन में लफ़्ज़े मुहम्म्द और अहमद कितनी जगह है ?
जवाब : लफ़्ज़े मुहम्म्द 4 जगह और अहमद 1 जगह है।
सवाल : वह कौन से सहाबी हैं जिनका नाम कुरआन में आया है ?
जवाब : वह सहाबी ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़ारिसा रदि अल्लाहु अन्हु हैं।
सवाल : वह कौन सी नेक ख़ातून हैं जिनका नाम कुरआन में आया है ?
जवाब : ह़ज़रत मरयम रदि अल्लाहु अन्हा।
सवाल : पहली वह़ी कहाँ नाज़िल हुई ?
जवाब : पहली वह़ी ग़ारे ह़िरा में नाज़िल हुई।
सवाल : ग़ारे ह़िरा किस पहाड़ में है ?
जवाब : जबले नूर में।
सवाल : ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम को कितनी ज़बानों का इल्म था ?
जवाब : सात लाख ज़बानों का।
सवाल : रुकू से उठ कर खड़े होने की हालत को क्या कहते हैं ?
जवाब : क़ौमा।
सवाल : दोनों सजदों के दर्मियान बैठने की हालत को क्या कहते हैं ?

जवाब : जलसा।
सवाल : इस्लाम की बुन्नियाद कितनी चीज़ों पर है ?
जवाब : पाँच चीज़ों पर (1) तौहीद (2) नमाज़ (3) रोज़ा (4) ज़कात (5) हज।
सवाल : रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद में तय्यब व ताहिर किस का लक़ब है ?
जवाब : ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह रदि अल्लाहु अन्हु का।
सवाल : ह़ज़रत फ़ातिमा ज़हरा रदि अल्लाहु अन्हा के कितने बेटे हुये ?
जवाब : तीन (1) ह़ज़रत इमाम हसन (2) ह़ज़रत इमाम हुसैन (3) ह़ज़रत मोहसिन
सवाल : हिजरत की रात आप के साथ कौन से सहाबी थे ?
जवाब : ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदि अ़ल्लाहु अन्हु।
सवाल : इस्लामी महीनों के नाम क्या हैं ?
जवाब : (1) मुहर्रमुल ह़राम (2) स़फ़रुल मुज़फ़्फ़र (3) रबीउल अव्वल (4) रबीउल आख़िर (5) जमादियुल अव्वल (6) जमादियुल आख़िर (7) रजबुल मुरज्जब (8) शाबानुल मुअ़ज़्ज़म (9) रमज़ानुल मुबारक (10) ईदुल फ़ित्र (11) ज़ी काइदह (12) ज़िल हिज्जह।
सवाल : क़ुरआन शरीफ़ किस महीने में नाज़िल हुआ ?
जवाब : रमज़ानुल मुबारक में।
सवाल : सजदे में कितनी उंगलियों का ज़मीन से लगना वाजिब है ?
जवाब : दोनों पैर की तीन-तीन उंगलियों के पेट का ज़मीन से लगना वाजिब है।
सवाल : सबसे पहले ज़मीन का कौन सा हिस्सा बना ?
जवाब : काबा-ए-मुअ़ज्जमा की ज़मीन का हिस्सा।
सवाल : सबसे पहले झूटी क़सम किसने खाई ?
जवाब : इबलीस ने।
सवाल : सबसे पहले कौन सा गुनाह सादिर हुआ ?
जवाब : ह़सद जो ज़मीन पर क़ाबील से और आसमान पर इबलीस से सादिर हुआ।
सवाल : सबसे पहले काला ख़िज़ाब (डाई) किसने लगाया ?
जवाब : फ़िरऔन ने।

सवाल : मेराज की रात बैतुल मुक़द्दस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अम्बियाए किराम को कितनी रकअ़त नमाज़ पढ़ाई ?

जवाब : दो रकअ़त।

सवाल : वह कौन से बुज़ुर्ग है जिनको ख्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिन्दुसतान में इस्लाम फैलाने का हुक्म दिया ?

जवाब : हज़रत ख्वाजा मुईनुद्दीन जिश्ती रदि अल्लाहु अन्हु।

सवाल : कब बिस्मिल्लाह पढ़ना फ़र्ज़ है ?

जवाब : जानवर ज़बह करते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना फ़र्ज़ है।

सवाल : क़ब्र में जो फ़िरिशते सवाल करते हैं उनके नाम क्या हैं ?

जवाब : (1) मुन्कर (2) नकीर।

सवाल : जो फ़िरिशते बन्दों के अच्छे बुरे अ़मल लिखने पर मुक़र्रर हैं उनके नाम क्या हैं ?

जवाब : किरामन कातिबीन।

सवाल : हुज़ूर ग़ौसे पाक रदि अल्लाहु अन्हु की पैदाइश कब हुई ?

जवाब : आप की पैदाइश 1,रमज़ानुल मुबारक 470 हिजरी में हुई।

सवाल : हुज़ूर ग़ौसे पाक रदि अल्लाहु अन्हु का विसाल कब हुआ और आपका मज़ार शरीफ़ कहाँ है ?

जवाब : आपका विसाल 11, रबीउल आखिर 561 हिजरी में हुआ और बग़दाद शरीफ़ में आपका मज़ार शरीफ़ है।

सवाल : हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदि अल्लाहु अन्हु की पैदाइश कब हुई ?

जवाब : आपकी पैदाइश 537 हिजरी में हुई।

सवाल : हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदि अल्लाहु अन्हु का विसाल कब हुआ और आपका मज़ार शरीफ़ कहाँ है ?

जवाब : आपका विसाल 6, रजब 633 हिजरी में हुआ और आपका मज़ार शरीफ़ अजमेर शरीफ़ में है।

सवाल : हुज़ूर आलाहज़रत रदि अल्लाहु अन्हु की पैदाइश कब हुई ?

जवाब : आपकी पैदाइश 10 शव्वालुल मकर्रम 1272 हिजरी मुताबिक़ 14 जुन

1856 ईसवी में हुई।
सवाल : हुज़ूर आलाहज़रत रदि अल्लाहु अन्हु का विसाल कब हुआ और आपका मज़ार शरीफ़ कहाँ हैं ?
जवाब : आपका विसाल 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1340 हिजरी मुताबिक़ 28 अक्तुबर 1921 में हुआ और आपका मज़ार शरीफ़ बरेली शरीफ़ में है।

मसनून दुआयें

(1) जब मस्जिद में दाखिल हों तों पहले दाहिना क़दम रखें और यह दुआ पढ़ें
'' अल्लाहुम्मफ़ तह ली अबवा ब रहमतिक''
(2) जब मस्जिद से निकलें तो पहले बायाँ क़दम निकालें और यह दुआ पढ़ें
'' अल्लाहम्मा इन्नी असअलु क मिन फ़द़लि क व रहमतिक ''
(3) खाना खाने से पहले यह दुआ पढ़ें
'' बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यदुर्रु मआ इस्मिही शैउन फ़िल अर्दि वला फ़िस्समाइ या ह़य्यु या क़य्यूम वहुवस समीउल अ़लीम ''
(4) खाना खानें के बाद यह दुआ पढ़ें
'' अल्हम्दु लिल्लाहिल लज़ी अत अ़ मना व सक़ाना वज अ़लना मिनल मुस्लिमीन''
(5) सोते वक़्त यह दुआ पढ़ें
'' अल्लाहुम्मा बिइस्मि क अमूतु व अह़या ''
(6) जब नींद से बेदार हों तो यह दुआ पढ़ें
'' अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह़याना बअ़ द मा अमातना व इलैहिन नुशूर ''
(7) जब किसी को मुसीबत में मुबतला देखें तो यह दुआ पढ़ें
'' अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आ़फ़ानी मिम्मब तला क बिही व फ़द्द लनी अ़ला कसीरिम मिम्मन ख़ ल क़ तफ़द़ीला ''
(8) नया चाँद देख कर यह दुआ पढ़ें
'' अल्लाहुम्मा अहिल्लहू अ़लैना बिल अम्नि वल ईमानि वस सलामति वल इस्लामि रब्बी वरब्बुकल्लाह ''
(9) जब नया कपड़ा पहनें तो यह दुआ पढ़ें

‘‘ अल्हमदुलिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही अ़ौरती व अ़ त जम्मलु बिही फ़ी ह़याती ’’

(10) जब किसी क़ौम या लशकर से जान व माल वग़ैरह का डर हो तो यह दुआ़ पढ़ें

‘‘ अल्लाहुम्मा इन्ना नजअ़लु क फी नुहूरिहिम व नऊ़जु बि क मिन शुरूरिहिम ’’

(11) घर से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें

‘‘ बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अ़लल्लाहि वला ह़ौ ल वला कुव्व त इल्ला बिल्लाह ’’

(12) शबे कद्र में यह दुआ़ कसरत से पढ़ें

‘‘ अल्लाहुम्मा इन्न क अ़फ़ुव्वुन तुह़िब्बुल अ़फ़ व फ़अ़फ़ु अ़न्नी ’’

(13) बैतुल ख़ला जाते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें

‘‘ अल्लाहुम्मा इन्नी अऊ़ज़ु बि क मिनल ख़ुब्सि वल ख़बाइस ’’

(14) बैतुल ख़ला से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें

‘‘ अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़ ह ब अ़न्निल अज़ा व आ़फ़ानी ’’

दुरूदे ग़ौसिया

जो शख़्स इस दुरूद को कम से कम एक मरतबा रोज़ पढ़ेगा उसे सात फ़ाइदे ह़ासिल होगें। 1.रिज़्क़ में बरकत 2.तमाम काम आसान हो जायेगें 3. मरते वक़्त कलिमा नसीब होगा 4. मौत की सख़्ती से महफ़ूज़ रहेगा 5.क़ब्र में वुसअ़त होगी 6. किसी की मौहताजी न होगी 7. ख़ुदा की मख़लूक़ उस से महब्बत करेगी।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ
الْجُوْدِوَالْکَرَمِ وَاٰلِہٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ